ख़्वाबों की खिड़की

Copyright © gavaksh

पुस्तक का नाम: 'ख़्वाबों की खिड़की'
लेखक : गवाक्ष के विद्यार्थी
संकलक व समीक्षक : राहुल शर्मा
संपादक : ऊर्जा श्रीवास्तव
डिज़ाइन : Sieg Outsourcing Pvt. Ltd.
प्रकाशक : गवाक्ष
प्रकाशन वर्ष : 2025
संस्करण : प्रथम
मुद्रक : न्यू एज कम्युनिकेशन्स प्रा.लि.

विशेष धन्यवाद :
गवाक्ष की टीम, प्रेरक, शिक्षक और मार्गदर्शक
गवाक्ष के सभी विद्यार्थी, जिन्होंने अपनी रचनात्मकता से इस पुस्तक को जीवंत बनाया

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। 'गवाक्ष' की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फ़ोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी या किसी भी अन्य माध्यम से अथवा पुनः उपयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित या संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

वेबसाइट : www.gavaksh.org
ईमेल : connect.gavaksh@gmail.com

ख़्वाबों की खिड़की

ग वा क्ष प ब्लि के श न

गवाक्ष में एक नई शुरुआत: बच्चों की आवाज़ को पहचान देना

गवाक्ष में मैंने देखा कि हमारे बच्चों के मन में अपने विचारों को व्यक्त करने को लेकर एक हल्की सी हिचक थी। कुछ बच्चों को अपनी ही कक्षा में खड़े होकर ज़ोर से पढ़ना भी मुश्किल लगता था। उनकी आँखों में एक झिझक, एक संकोच साफ़ दिखाई देता था—जो मेरे दिल को बहुत गहराई से छू गया। तभी मुझे समझ आया कि हमें कुछ ऐसा करना होगा जिससे वे अपनी आवाज़ पहचान सकें और बेझिझक बोल सकें।

मुझे हमेशा से विश्वास रहा है कि कहानियाँ पढ़ना और लिखना बच्चों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी सोच के साथ 'गवाक्ष बुकशाला' की शुरुआत हुई—एक छोटा-सा प्रयास जिससे बच्चों को पढ़ने का आनंद मिल सके। शुरू-शुरू में बच्चे थोड़े असहज थे, लेकिन धीरे-धीरे वे इस समय को पसंद करने लगे। मैंने उनकी आँखों में जिज्ञासा और आत्मविश्वास की चमक देखी।

फिर एक दिन, अचानक एक विचार मन में आया—क्यों न गवाक्ष के बच्चों द्वारा लिखी कहानियों की एक किताब प्रकाशित की जाए? यह सोच दिल से निकली थी और शायद इसीलिए ब्रह्मांड ने भी साथ दिया। मैंने यह बात अपने एक पुराने पारिवारिक मित्र राहुल शर्मा जी से साझा की—जो एक प्रतिष्ठित लेखक हैं और कहानी लेखन व पठन के सच्चे समर्थक भी। उनके सहयोग से हमने गवाक्षर्स के पढ़ने और लिखने की आदतों को मजबूत करने की दिशा में और गहराई से काम करना शुरू किया।

परिणाम बेहद ख़ूबसूरत रहे। बच्चों ने नए शब्द सीखे, भावनाओं को बेहतर समझा और अपनी कल्पना को पंख दिए। वे बेहतर श्रोता बने, अधिक संवेदनशील और अपने विचारों को खुलकर व्यक्त करने लगे।

यह तो बस शुरुआत है। हर बार जब वे एक पन्ना पढ़ते हैं या एक कहानी लिखते हैं, वे अपनी ही आवाज़ की ताक़त को खोज रहे होते हैं।

गवाक्ष बुकशाला केवल किताबों का एक कोना नहीं, बल्कि बच्चों को खुद से जोड़ने और उनकी चुप आवाज़ों को शब्द देने की एक संजीदा कोशिश है।

— अर्चना श्रीवास्तव
संस्थापक एवं अध्यक्ष

भूमिका

यह पुस्तक केवल कहानियों का संग्रह नहीं है, यह उन नन्हीं कल्पनाओं की उड़ान है जिन्हें हमने गवाक्ष के लिखी और सहनौली केंद्रों के बच्चों के साथ पिछले एक वर्ष में पनपते देखा है। यह एक साझा प्रयास रहा है—एक ऐसी यात्रा जिसमें बच्चों ने धीरे-धीरे पढ़ने और लिखने की कला को सीखा, समझा और आत्मसात किया।

इस प्रक्रिया में हमारे केंद्र प्रमुख—सुनील, हरदीप और संयम का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने बच्चों को निरंतर मार्गदर्शन और हौसला दिया, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा और वे खुद को अभिव्यक्त करने लगे। हमने बच्चों के साथ मिलकर कहानी शुरू करने और समाप्त करने के विभिन्न तरीके साझा किए, लेकिन कहानियों की आत्मा—कल्पना, उनके सपने और जिज्ञासा—उनकी अपनी थी।

मुझे कभी इस बात पर संदेह नहीं रहा कि ये बच्चे कुछ खास कर सकते हैं। और जब मैंने इनकी अंतिम कहानियाँ पढ़ीं—मैं सचमुच स्तब्ध रह गया।। इन पन्नों में जो दुनिया रची गई है, वह इन बच्चों के भीतर छिपी एक अद्भुत शक्ति की झलक देती है।

इस प्रयास को सफल बनाने में कई लोगों का योगदान रहा है। मैं गवाक्ष की संस्थापक अर्चना का विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिनका निरंतर सहयोग इस यात्रा की रीढ़ रहा। ज़ोया ने पूरे प्रोजेक्ट के दौरान समन्वय का अद्भुत काम किया। कहानियों के संपादन की ज़िम्मेदारी ऊर्जा ने संभाली, और जैसे उनके नाम में ऊर्जा है, वैसे ही उन्होंने इस संग्रह में जान डाल दी। हमने कहानियों की आत्मा को बरकरार रखते हुए केवल आवश्यक सुधार किए हैं ताकि बच्चों की असली आवाज़ और भावनाएँ ज्यों की त्यों बनी रहें।

पुस्तक के रंग-रूप और कलेवर के लिए रुहानी को विशेष आभार, जिन्होंने इस पुस्तक को जीवंत रूप दिया और ख़्वाबोंकी खिड़की को बेहद ख़ूबसूरती के साथ चित्रित किया। साथ ही श्री अनुप सिंह दहिया को टाइपिंग कार्य में सहयोग प्रदान करने के लिए हार्दिक धन्यवाद। इस कहानी संग्रह को प्रकाशित करने में प्रवीण मोदी जी ने अपनी निःस्वार्थ सहायता प्रदान की और 'ख़्वाबों की खिड़की' पुस्तक का आकार ले सकी।

मैं उन सभी का आभार व्यक्त करता हूँ जो इस सफ़र का हिस्सा बने। यह तो बस एक शुरुआत है—अब और भी कहानियाँ आएँगी, और भी सपने आकार लेंगे।

— राहुल शर्मा
संकलक और समीक्षक

संपादकीय

कहानियां सिर्फ कल्पना पर आधारित नहीं होतीं बल्कि कल्पना के सहारे बहुत कुछ कह जाती हैं। सपने सच करने के लिए सपने देखना ज़रूरी है। बदलाव भी तब संभव होता है जब बदलाव की कल्पना की जाती है। बाल-मन की कल्पना की उड़ान भविष्य की राह भी तय करती है। और इसी उड़ान को देखने व समझने के लिए गवाक्ष के प्यारे बच्चों के मन में झांकने का एक प्रयास है – 'ख़्वाबों की खिड़की'।

इस कहानी संग्रह में 15 बच्चों की कहानियों को संकलित किया गया है। 6ठी से 11वीं कक्षा के बच्चों ने अपनी आकांक्षाओं और ख़्वाबोंको कागज़ पर उकेरा है। यहां सिर्फ सपने नहीं हैं, बल्कि इन बच्चों की आंखों से दुनिया कैसी दिखती है, इसकी एक झलक भी है।

कहानियों में जादू, जिन्न और चमत्कार की बातें हैं। जादू जो दुनिया को बदल दे या एक ऐसी दुनिया में ले जाए जो वास्तविक दुनिया से बिल्कुल अलग हो। ये इच्छाएं दर्शाती हैं कि ये बच्चे परिवर्तन के पक्षधर हैं। बच्चे नासमझ नहीं होते, अपितु, उनकी अपनी एक समझ होती है। वे अपने तरीके से दुनिया को देखते हैं, परखते हैं और अपनाते हैं। इस किताब में कुछ कहानियां बेहद गंभीर संवेदनाओं से भरी हुई हैं और कुछ बालमन के कौतुहल से, कुछ कहानियों में सपने हैं तो कुछ में सच्चाई की तस्वीर।

इस किताब में शामिल की गई कहानियां सिर्फ शब्दों का जाल नहीं हैं। यहां हो सकता है कि साहित्य के विद्वानों को भाषा और शैली की त्रुटियां मिलें। लेकिन इस किताब का उद्देश्य पांडित्यपूर्ण उत्कृष्ट कहानी संग्रह प्रकाशित करना नहीं है, बल्कि बच्चों को लेखन की शक्ति से परिचित कराना है। उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर देना और लेखन के प्रति उनकी रुचि को बढ़ावा देना है। इस प्रकाशन का उद्देश्य व्यावसायिक या साहित्यिक नहीं अपितु सामाजिक विकास है।

— ऊर्जा श्रीवास्तव

भारत सरकार
वित मंत्रालय
वित्तीय सेवाएं विभाग
"जीवन दीप"
१०, पार्लियामेन्ट स्ट्रीट,
नई दिल्ली-११०००१

GOVERMENT OF INDIA
MINISTRY OF FINANCE
DEPARTMENT OF FINANCIAL SERVICES
"JEEVAN DEEP"
10, PARLIAMENT STREET,
NEW DELHI-110 001

सत्यमेव जयते

दिनांक Dated the 23 मई 2025

जब मुझे 'गवाक्ष' द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पुस्तक 'ख्वाबों की खिड़की' के लिए संदेश लिखने का अनुरोध प्राप्त हुआ तो लगा यह ज़्यादा मुश्किल काम नहीं होगा। लेकिन जब इस किताब में संकलित कहानियों को पढ़ा और गवाक्ष के प्रयासों के बारे में जाना तो दो शब्द लिखना सरल नहीं था।

किशोर-वय बच्चों को किताब पढ़ने और लेखन के प्रति जागरूक करना एक दुरूह कार्य है। वह भी आज के डिजिटल दौर में। सोशल मीडिया और रील्स की भीड़ में बच्चों की लिखी ये कहानियां मन को सुकून देती हैं। इसमें बाल-सुलभ इच्छाएं हैं जो बच्चों के मन की सहजता और सरलता का परिचय देती हैं। सभी कहानियां पठनीय हैं लेकिन कुछ कहानियों, जैसे एक लड़की बनी लड़का, बिना पंखों के उड़ना, अलादीन का चिराग आदि ने विशेष रूप से प्रभावित किया।

नन्हे लेखकों को लेखन के क्षेत्र में प्रवेश के लिए साधुवाद! मैं गवाक्ष की पूरी टीम को इस प्रकाशन कार्य के लिए बधाई और भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

(धर्मबीर)
उप निदेशक (रा.भा.)

Chairman's Office

KEGGFARMS
GROUP

8TH FLOOR, EROS APARTMENTS
56, NEHRU PLACE, NEW DELHI-110019

Expressions through the Transformative Years

That wonderous period- when one is no longer a young child and yet not an adult. That period of transition when one starts to "Discover" the World beyond the comforting confines of Parental home. That period- when the flower has not fully expressed itself but the blossom has started to unfold; that period of dawn when the World starts to light up but the Sun is still just above the horizon. The time when one's imagination is not constrained by reality or circumstances. That is the period of "Schooling". Not just learning Arithmetic or Hindi or History, Geography and so on - but also what happens beyond the confines of safety and home. Most evolutionary period of one's life – the formative years- the School years. Where friends are made and one learns to deal with Bullies or suffer them. That period when One's mind starts to open and is most receptive to what it receives through academic learning and experiences. When neither the Mind nor the Heart accepts boundaries – and is willing to fight any constriction.

It is in this stage of life that Children can express themselves in line with their imagination and the state of their evolving minds. And what they feel and write is an undiluted truth of their lives as they perceive then.

Stories written by these children are in the truest sense are expressions of their hearts, minds and imagination as they perceive at this period of their lives. Not constrained by bounds of reality that will start to shackle their minds and expression as they move on into adulthood.

These are tales of hopes and dreams – unbound. They are windows into the hearts and minds of the children who have written them.

Vinod. S. Kapur

समीक्षाएँ और सराहना

“गवाक्ष के इन जिज्ञासु नन्हे लेखकों की कलम से निकली कहानियां आपको समाज के कई पहलुओं पर गहराई से सोचने पर मजबूर करती हैं। भले ही ये रचनाएं उनके बालपन की मासूमियत दर्शाती हैं, पर इनमें सामाजिक विसंगतियां, मानवीय त्रुटियां और इन सबका बच्चों के मन पर पड़ने वाला गहरा प्रभाव बेहद ख़ूबसूरती से बुना गया है। ये नन्हे रचनाकार अपनी कहानियों से समाज के अनगिनत रंगों को सिर्फ दिखाते ही नहीं, बल्कि उनमें एक नई उम्मीद का रंग भी भरते हैं। बच्चों की इस अद्भुत सोच को कागज़ पर उतारकर हम तक पहुंचाने के लिए गवाक्ष टीम का दिल से शुक्रिया। मेरा मानना है कि यह पहल दूसरे बच्चों को भी लिखने, सोचने और बेझिझक अपनी बात रखने की प्रेरणा देगी।”

— अनामिका जोशी (बत्तो)
स्पोकेन वर्ड आर्टिस्ट

“पहले तो यह सफ़ाई दे दूँ कि सबसे कठिन होता है सरलता को शब्द देना अथवा उस के पक्ष में बयान देना। इसलिए गवाक्ष द्वारा प्रकाशित छोटी कहानियों की पुस्तक “ख़्वाबोंकी खिड़की” पर कुछ लिखना इसी तरह की प्यारी सी कठिनाई रही । यह बतौर पाठक आपको अपनी सरलता से बाँध लेती है। दरअसल यह छोटी कहानियों की बड़ी किताब है। असल में इसमें दर्ज कहानियाँ अपनी लघुता में बहुत महीन और गहरी बात लिए हुए हैं। मेरी इस बात को अतिश्योक्ति न माना जाये तो कहूँगा, मुझे हरदम लगता है कि बड़ी और महान रचनाएं हमेशा धीमी आवाज़ में बात करती हैं। ये रचनाएं वैसी ही हैं। इस संग्रह में नए बच्चों की कलम से निकली कल्पनाओं में यदि आपको कुछ कच्चापन या अनगढ़पन दिखता है तो जैसे-जैसे आप रचना के भीतर घुसते हैं, वह इसकी ताक़त बनकर सामने आते हैं। इन कहानियों में सहजता है, अद्भुत कल्पनाशीलता है, इच्छाएँ हैं, ख़्वाब हैं, ख़्वाबोंऔर हौसलों के पंख हैं, सपनों की उड़ान का साहस है। यहाँ आकर यह संग्रह विशिष्ट बन जाता है। मैं इस पुस्तक में शामिल नई स्याहियों को, नए लेखकों को शुभकामनाएं देता हूँ और साथ ही, संपादक सहित गवाक्ष की पूरी टीम को बधाई देता हूँ जो इस नवाचार का आधार हैं।”

— डॉ एम के पांडेय
एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी)
जनसूचना अधिकारी सत्यवती कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

अनुक्रमणिका

I गवाक्ष में एक नई शुरुआत: बच्चों की आवाज़ को पहचान देना
II भूमिका
III संपादकीय

कहानियों की सूची

1. जादुई कैमरा 01
2. मेरे पास पालतू ड्रैगन होता 04
3. जादुई पेंसिल 07
4. एक लड़की बनी लड़का 09
5. मेरे पास टाइम मशीन होती 14
6. बिना पंखों के उड़ना 17
7. एक चॉकलेट की दुनिया 20
8. वीरान घर का रहस्य 23
9. सूटकेस की चाबी 26
10. अलादिन का चिराग 29
11. जादुई चट्टान 31
12. बोलने वाला पेड़ 34
13. एक बहन की अद्भुत यात्रा 37
14. चित्रों वाली तक़दीर 41
15. अनोखी दोस्ती 44

1

जादुई कैमरा

-भावना कुमारी-

बहुत समय पहले की बात है, एक गाँव में दो सहेलियां रहती थीं – कोमल और कमला। कोमल थोड़ी शरारती थी और अक्सर दूसरों को तंग किया करती थी, जबकि कमला शांत स्वभाव की और दूसरों की मदद करने वाली लड़की थी।

एक दिन, कोमल और कमला कहीं साथ-साथ जा रही थीं, तभी अचानक किसी ने कोमल को पुकारा। कोमल ने इधर-उधर देखा, लेकिन वहां कोई नहीं था। तभी उसे लगा कि किसी ने उसकी चोटी खींची। उसे लगा शायद कमला ने उसके साथ मज़ाक किया है, लेकिन कमला तो उससे काफी दूर खड़ी थी। कोमल सोच में पड़ गई। तभी दोनों को रास्ते में एक थैला मिला। कमला ने कहा लगता है किसी का सामान छूट गया है, थैले में देखते हैं, शायद कोई अता-पता मिल जाए तो हम उसे लौटा सकेंगे। कोमल को घर जाने की जल्दी थी, उसे यूं भी कमला की सबकी मदद करने की आदत पसंद नहीं थी। वह अपनी दुनिया में मगन रहना अधिक पसंद करती थी। कोमल ने कहा, “मुझे देर हो रही है, तुम थैला देखो और जिसका है उसे ढूंढ कर दे दो। मैं चलती हूं।” यह बोल कर कोमल घर की ओर चल दी।

कमला ने थैले में देखा लेकिन उसे कुछ भी ऐसा नहीं मिला जिससे उस थैले के मालिक का पता चल सके। कमला थैला लेकर अपने घर लौट आई। उस थैले में एक कागज का डब्बा था। उसने उसे खोल कर देखा तो उसमें एक पुराने जमाने का कैमरा था। कमला ने उसे चलाने की कोशिश की लेकिन शायद वह खराब था। कमला ने उस कैमरे को अपने बैग में रख लिया। इस बैग में वह अपनी वो चीज़ें रखती थी जो उसे खास लगती थी, लेकिन दूसरो को बेकार।

एक दिन कमला ने कोमल को अपने घर बुलाया और कहा, "आओ, आज हम कुछ नया खेलते हैं।" कमला अपने बैग का सामान कोमल को दिखाना चाहती थी। लेकिन कोमल ने कहा, "मुझे तो बगीचे में खेलना पसंद है, घर में नहीं।" यह सुनकर कमला बोली, "ठीक है, मैं भी तुम्हारे साथ बगीचे में चलती हूँ।" जल्दी में कमला अपना बैग टेबल पर ही छोड़ गई।

उनके जाते ही दो चोर कमला के घर में घुस आए और चीजें चुराने लगे। तभी उन्हें महसूस हुआ कि कोई उनकी तस्वीरें खींच रहा है। इससे पहले कि वे कुछ समझ पाते, अचानक एक तेज़ रोशनी कमरे में फैल गई। एक रहस्यमयी आवाज़ गूंज उठी – "कौन हो तुम? यहाँ क्यों आए हो? चले जाओ वरना बुरा अंजाम होगा!" डर के मारे चोर घर से भाग निकले।

कुछ देर बाद कमला घर लौटी। जैसे ही उसने टेबल पर रखा कैमरा देखा तो उसे याद आया कि वह अपना सारा सामान टेबल पर ही छोड़ गई थी। उसने सोचा कहीं उसके भाई ने कैमरा न देख लिया हो। वह खेलेगा तो नहीं लेकिन उसे तोड़ सकता है। कमला ने कैमरे को हाथ में लेकर जैसे ही ऑन किया उसमें से पांच-छः तस्वीरें नीचे गिरीं। चोरी की पूरी घटना कैमरे में कैद हो गई थी। उसने चोरों की तस्वीरें पुलिस को देकर उन्हें पकड़वा दिया।

बाद में, कमला ने कैमरे में और भी रिकॉर्डिंग देखी, तो हैरान रह गई। उसमें कोमल की चोटी खींचने वाली घटना भी रिकॉर्ड थी। कैमरे ने उसे उस दिन की घटना भी दिखाई कि कैसे वह थैला बार-बार उसके रास्ते में आ रहा था। जब तक उसने उसे उठा नहीं लिया। शायद यह जादुई कैमरा उसके पास खुद आना चाहता था। कमला ने जैसे ही यह बात सोची, कैमरे के लेंस पर हंसता हुआ इमोजी दिखाई देने लगा। कमला चौंक गई।

अचानक कैमरे से आवाज़ आई, "डर मत, मैं एक जादुई कैमरा हूँ। अगर तुम मेरी दोस्त बनोगी, तो मैं तुम्हारी मदद करूंगा। जब भी तुम किसी की तस्वीर लोगी, मैं उसके बारे में सब कुछ बता सकूंगा – उसका स्वभाव, उसका अतीत और उसका भविष्य भी।"

कमला ने कैमरे से दोस्ती कर ली और वह दूसरों की मदद के लिए उसके जादुई ताकतों का इस्तेमाल करने लगी। वह लोगों की तस्वीरें खींचती और उन्हें उनके जीवन से जुड़ी जरूरी बातें बताकर उनका मार्गदर्शन करती।

इस तरह एक साधारण सी लड़की और एक जादुई कैमरे की दोस्ती ने कई ज़िंदगियाँ बदल दीं। धीरे-धीरे कोमल ने भी कमला के बदलाव को महसूस किया। उसे समझ आया कि कमला की अच्छाई और रहस्य दोनों उसकी ताकत थे। अब कोमल भी कमला के साथ जादुई कैमरे की मदद से लोगों की सहायता करने लगी। पहले जो कोमल दूसरों को तंग करती थी, वही अब सबके लिए एक भरोसेमंद सहेली बन गई थी। दोनों सहेलियाँ मिलकर गाँव के लिए कुछ नया और अच्छा करने का सपना देखने लगीं – और उस सपने की शुरुआत एक जादुई कैमरे से हुई थी।

भावना कुमारी

कक्षा: 6ठी
उम्र: 12 वर्ष
गांव: सहनौली
शौक: नृत्य, गायन, चित्रकला और पढ़ाई
सपना: शिक्षिका बनना

“गवाक्ष पाठशाला मेरे लिए एक विशेष स्थान है। मैं बड़ी होकर शिक्षिका बनना चाहती हूं, ताकि मैं भी दूसरों के साथ प्रेम और ज्ञान बाँट सकूं। मुझे नृत्य, गायन, चित्र बनाना और पढ़ाई करना बहुत पसंद है। कक्षा में जो स्नेह और आनंद मिलता है, वह मुझे बड़े सपने देखने की ताकत देता है।”

2

मेरे पास पालतू ड्रैगन होता

-आकाश प्रजापति-

एक बार की बात है। गर्मी की छुट्टियों में मैं अपने माता-पिता और पूरे परिवार के साथ एक घने जंगल की सैर पर गया। वहाँ की हरियाली, रंग-बिरंगे पक्षी और जानवरों की आवाज़ें मन को बहुत भा रही थीं। मैं उन ख़ूबसूरत पलों को अपने मोबाइल कैमरे में कैद कर रहा था।

हम गाड़ी से जंगल के और भीतर गए। कुछ समय बाद हम एक शांत जगह पर रुककर दोपहर का खाना खाने लगे। पेड़ों की छांव में सब खाना खा रहे थे और मैं थोड़ी दूर टहलने निकल गया। तभी मेरी नजर झाड़ियों के बीच चमकती हुई नीले रंग की एक चीज़ पर गई। मैंने उत्सुकतावश झाड़ियाँ हटाईं

तो देखा — वह एक बड़ा सा नीले रंग का अंडा था, जो मेरे छूते ही हल्की सी रोशनी छोड़ने लगा। मैं चुपचाप उसे लेकर घर आ गया।

घर आकर मैंने उस अंडे को अपने कमरे में बल्ब के पास रख दिया और गद्दों के बीच छुपाकर सो गया। अगली सुबह उठते ही मेरी नजर सबसे पहले उसी अंडे पर गई। मैं उसे देख ही रहा था कि वह अचानक हिलने लगा और फिर कुछ ही पलों में वह अंडा टूट गया। उसमें से एक छोटा सा, प्यारा और मासूम सा नीला ड्रैगन निकला।

मैं हैरान तो था, पर वह इतना प्यारा था कि डर नहीं लगा। हम दोनों ने खेलना शुरू कर दिया और जल्द ही हमारी गहरी दोस्ती हो गई। अगली सुबह वह ड्रैगन थोड़ा और बड़ा हो गया। उसे बहुत भूख लग रही थी, लेकिन घर में खाना कम था। वह अचानक घर का दरवाजा तोड़कर उड़ गया। मैंने उसकी पूंछ पकड़ ली और साथ में उड़ गया — यह मेरी पहली उड़ान थी! ऊँचाई से मैं गिरने ही वाला था कि उसने मुझे अपनी पीठ पर बैठा लिया। अब हम आसमान में उड़ते रहते, नए-नए स्थानों पर जाते। वह मेरी बात समझता और मैं उसकी। हम जैसे दो सच्चे दोस्त बन गए थे।

लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, मुझे एहसास हुआ कि इंसानों की दुनिया उसके लिए सुरक्षित नहीं है। मैंने तय किया कि उसे वापस जंगल में, उसके माता-पिता के पास छोड़ दूंगा।

एक दिन मैंने कहा, “चलो, एक बार फिर जंगल घूमने चलते हैं।” हम दोनों ने एक लंबी उड़ान भरी, बादलों को चीरते हुए हरे-भरे जंगल में पहुंचे। वहाँ पहुँचकर मैंने उससे कहा, “अब तुम्हें अपने परिवार के साथ रहना चाहिए।” हम दोनों गले लगकर खूब रोए। फिर वह धीरे-धीरे पेड़ों के पीछे खो गया।

मैं घर लौट आया। अगले दो-तीन दिन उदासी में बीते। लेकिन एक शाम अचानक आकाश में एक लंबी छाया सी उड़ती नजर आई। मैं दौड़कर बाहर गया — वो वही ड्रैगन था! उसने भी मुझे देखा और मेरी ओर उड़ते हुए आया। हम फिर से गले लगे, जैसे कभी बिछड़े ही न थे।

मैं समझ गया था कि हम जिनसे प्यार करते हैं, जिनका ख्याल रखते हैं, वे हमें कभी नहीं भूलते, क्योंकि सच्चा साथी हमें जीवनभर याद रहता है।

आकाश प्रजापति

कक्षा: 11वीं
गांव: लिखी
शौक: बैडमिंटन, क्रिकेट
सपना: वकील बनना

“गवाक्ष पाठशाला की पुस्तक में मेरी कहानी शामिल होना मेरे लिए बेहद रोमांचक है! यहां का सहयोग और मार्गदर्शन मेरे वकील बनने के सपने को नई ऊर्जा देता है। अपने विचारों को व्यक्त करने और दूसरों को प्रेरित करने का यह अवसर मेरे लिए अनमोल है। बैडमिंटन और क्रिकेट मेरे शौक हैं, लेकिन सच्चा जुनून है – सीखना!”

3

जादुई पेंसिल

-चिंकी कुमारी-

मेरे पास एक किट है, जिसमें मैं अपना स्कूल का सारा सामान रखती हूं। जैसे इरेज़र, कलर और पेंसिल। मेरे पास बहुत सारी पेंसिल हैं, लेकिन उन सबमें से मेरी एक पसंदीदा पेंसिल है। इसलिए मैं जब भी कोई परीक्षा देती या कहीं हस्ताक्षर करती तो अपनी पसंदीदा पेंसिल का ही उपयोग करती। इस पेंसिल का रंग पीला और नीला है। ऊपर की तरफ यह काले रंग की है। यह पेंसिल देखने में बहुत सुंदर लगती है, इतनी सुंदर कि देखने वाला इसे देखकर ही आकृष्ट हो जाता है। इस पेंसिल की चमक अन्य पेंसिल से अलग है। इसलिए यह पेंसिल मुझे सबसे ज्यादा अच्छी लगती है। इस पेंसिल से मैं कितना भी काम कर लूं, लेकिन यह बिलकुल भी नहीं घिसती है। बल्कि, अगले दिन देखती हूं, तो जितना वह घिसी होती उतनी ही बड़ी वापस हो जाती है। यदि वह पेंसिल मुझ से कहीं गुम भी हो जाए तो किसी न किसी माध्यम से मेरे पास वापस आ ही जाती है। यह बात मैंने कई बार गौर की है।

एक दिन मैं जंगल में घूमने गई थी। साथ में अपनी एक पुस्तक और पसंदीदा पेंसिल कुछ जरूरी सामान ले गई थी। जंगल में घूमते-फिरते रात हो गई। वह जंगल बहुत घना था और मैं वहां अकेली थी। हर तरफ से जानवरों की आवाज आ रही थी।

मैं उस जंगल से बाहर निकलने का रास्ता भूल गई थी। फिर मुझे भूख लगने लगी। तो मैंने अपने बैग में खाने का सामान देखा लेकिन सब कुछ खत्म हो चुका था। बस मेरी किताबें और मेरी पसंदीदा पेंसिल बची थी। तभी मैंने देखा कि मेरी पेंसिल कुछ अलग ही तरह से चमक रही है। मेरे मन में उससे कुछ

बनाने का ख्याल आया। अंधेरे में भी पेंसिल की चमक से बहुत प्रकाश हो गया था। मैंने अपनी ड्रॉइंग बुक में खाने का कुछ सामान बनाया क्योंकि भूख के मारे मेरे दिमाग में सिर्फ खाने पीने की चीजें घूम रही थीं। मैंने जैसे ही चित्र बनाया वह सब कुछ असली खाने में बदल गया। मैं आश्चर्यचकित थी। एक बार को तो मुझे लगा कि मैं सपना देख रही हूं। लेकिन यह सच था। मैंने जल्दी-जल्दी सब कुछ खा लिया, तभी उस पेंसिल से टॉर्च जैसी रौशनी आने लगी और रौशनी आगे की तरफ बढ़ने लगी। मैने रौशनी की दिशा में बढ़ना शुरू कर दिया। चलते-चलते मुझे उस जंगल से बाहर निकलने का रास्ता मिल गया और मैं जंगल से बाहर निकल कर घर पहुंच गई।

उस दिन के बाद से यह पेंसिल मुझे और भी प्रिय हो गई। मैं जहां जाती इस पेंसिल को अपने पास रखती। मैं उसकी देखभाल भी करती कि कहीं गुम न हो जाए और कहीं किसी और को इस पेंसिल की जादूई ताकत का पता न चल जाए। जब भी किसी ज़रूरतमंद या गरीब व्यक्ति को सहायता की ज़रूरत होती तो मैं अपनी जादूई पेंसिल से उसकी मदद ज़रूर करती। लेकिन यह ध्यान रखती की किसी और को इस पेंसिल के चमत्कार के बारे में पता न चल जाए और वह उसे चुरा कर उसका दुरुपयोग न करने पाए।

चिंकी कुमारी

कक्षा: 10वीं
उम्र: 14 वर्ष
गांव: सहनौली
शौक: नृत्य
सपना: डॉक्टर बनना

"गवाक्ष पाठशाला ने मुझे सपने देखना और खुद पर विश्वास करना सिखाया है। मैं डॉक्टर बनने का सपना देखती हूं, और नृत्य हर दिन मुझे प्रेरित करता है। स्कूल आकर मुझे नई ऊर्जा और अपने लक्ष्य के लिए मेहनत करने का संकल्प मिलता है।"

4

एक लड़की बनी लड़का

-सोनम कुमारी-

चेक वाली पैंट-शर्ट, हाथ में कड़ा, पैरों में पुरानी चप्पलें, छोटे-छोटे कटे हुए बाल और अक्खड़ चाल। ये मिक्कू की पहचान है। मोहल्ले में अपने दोस्तों के साथ कंचे खेलना उसे बहुत पसंद है। लेकिन उसकी कद-काठी ऐसी कि बाकी लड़के उसका मज़ाक उड़ाते रहते। कोई पूछता "तू इतना पतला क्यों है?", कोई कहता "तू तो लड़कियों जैसा नाजुक दिखता है", "तेरी आवाज तो लड़कियों जैसी मीठी-मीठी है।" मिक्कू दोस्तों की बातें सुन कर कभी तो नज़र अंदाज कर देता और कभी-कभी शून्य में खो जाता। जब दोस्त ज्यादा छेड़ते तो गुस्सा करते हुए कहता कि "तुम सब फिर से शुरू हो गए। अगर ये सब बोलोगे तो मैं तुम्हारे साथ नहीं खेलूंगा।" कंचों पर मिक्कू का निशाना सबसे सटीक बैठता था। इसलिए दोस्त नहीं चाहते थे कि वह उनके साथ खेलना बंद कर दे। दूसरे मोहल्ले के बच्चों के साथ जब कंचों का मैच होता तो मिक्कू की वजह से ही उनकी टीम जीत पाती थी। मिक्कू की बातें सुनकर दोस्तों ने तुरंत माफी मांगी लेकिन मिक्कू नाराज़ ही रहा।

मिक्कू को बाज़ार घूमने का बहुत शौक था और अगर कभी बाज़ार में मेला लगा हो तो मिक्कू बिना जाए रह न पाता। दोस्तों ने सोचा कि आज बाज़ार में मेला लगा है और मिक्कू को पता नहीं है। इसे मेले में ले चलते हैं। मेला दिखाने ले जाएंगे तो वह खुश भी हो जाएगा और हमें माफ भी कर देगा। दोस्तों ने मान-मनुहार करके मिक्कू की आंखों पर पट्टी बांधी और बाज़ार की तरफ ले चले। मिक्कू गुस्सा तो था लेकिन उसने सोचा कि चलो देखते हैं कि दोस्त कहां ले जाते हैं और वह आंखों पर पट्टी बंधवा कर उनके सहारे चल पड़ा। रास्ते में मिक्कू ने दोस्तों से पूछा कि कहां लेकर जा रहे हो? तुम मुझे कहीं भी ले कर चलो मैं तुम्हें माफ नहीं करूंगा। मिक्कू की बातें सुनकर उसके दोस्तों ने कहा कि हम तुम्हें एक ऐसी जगह लेकर जा रहे हैं जहां जाकर तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा और तुम हम सबको माफ कर दोगे। मिक्कू के दोस्तों ने कहा कि बस तुम थोड़ा सा इंतज़ार और कर लो, अब वो जगह आने ही वाली है। चलते-चलते मिक्कू और उसके दोस्त मेले वाली जगह पर पहुंच गए और मिक्कू को घेरकर खड़े हो गए। मिक्कू ने पूछा कि क्या हम पहुंच गए? तो दोस्तों ने हामी भरी और उसकी आंखों की पट्टी खोलने लगे। जब मिक्कू ने अपनी आंखें खोलीं तो देखा वह मेले में खड़ा था। यह देख कर वह बहुत खुश हुआ। मिक्कू ने कहा, "अरे वाह! तुम सब मुझे मेला दिखाने लाए हो। धन्यवाद, तुम सब मेरे बहुत अच्छे दोस्त हो। मैंने तुम सबको माफ किया।" मिक्कू की बातें सुनकर उसके दोस्त मुस्कुराने लगे। उसके दोस्त रघु ने कहा, "अरे धन्यवाद तो तुम्हें कि तुमने हमें माफ कर दिया।"

मिक्कू और उसके दोस्त मेला घूमने लगे। घूमते-घूमते मिक्कू चूड़ी की दुकान पह पहुंचा। वहां सुंदर-सुंदर रंग-बिरंगी चूड़ियां सजी हुई थीं। उसके दोस्त खिलौने वाली गाड़ी और तीर कमान की दुकानों पर सामान देख रहे थे। मिक्कू का मन उन रंग-बिरंगी चूड़ियों पर आ गया था। वह उन्हें खरीद लेना चाहता था, लेकिन वह लड़कियों वाला कोई भी सामान नहीं खरीद सकता था। अगर वह लड़कियों वाला कोई भी सामान खरीदता तो सबको पता चल जाता कि मिक्कू एक लड़का नहीं बल्कि लड़की है। और अगर मिक्कू की दादी और पिताजी को ये बात पता चल जाती तो उसकी जान को खतरा था। यह सब सोचते हुए और चूड़ियों को एक बार फिर हसरत से देख कर मिक्कू ने आंखें मूंद लीं और अपने दोस्तों को वहीं मेले में छोड़ कर अपने घर वापस आ गया। वह बहुत ही दुखी थी। उसकी मां ने पूछा, "बेटी

मिक्कू, तुम तो मेला देखने गई थी तो तुम वहां से जल्दी क्यों आ गई? क्या मेला जल्दी खत्म हो गया? क्या तुम इसलिए उदास हो?” मिक्कू ने कहा कि मैं मेला खत्म होने के कारण उदास नहीं हूं और बात को खत्म करने की कोशिश की। मां ने फिर पूछा “तो क्या हुआ है, मुझे बताओ। तुम उदास क्यों हो, रो क्यों रही हो? क्या तुम्हें किसी ने मारा है या किसी बात का बुरा लगा है?” मां के बार-बार पूछने पर मिक्कू से बर्दाश्त नहीं हुआ और उसका रोना बढ़ गया। बड़ी मुश्किल से उसने कहा कि मुझे यह जानना है कि जब मैं एक लड़की हूं तो मुझे तुमने लड़का बना कर क्यों पाला है। मेरे लड़की होने से दादी और पिताजी को क्या दिक्कत है?

मिक्कू की बातें सुनकर उसकी मां को भी रोना आ गया। मां ने कहा कि आज मैं तुम्हें सारी सच्चाई बता ही देती हूं। अब तुम बड़ी हो गई हो और बातों को समझने के काबिल हो गई हो। मिक्कू की मां ने बताया कि उन्होंने उससे पहले एक और बेटी को जन्म दिया था। उसके पैदा होने पर घर में कोई खुशी नहीं मनाई गई। यहां तक कि मुझे उसकी देखभाल भी ठीक से नहीं करने दी जाती थी। तुम्हारी दादी और पिताजी का कहना था कि लड़की अपने आप पल जाएगी। जब वह बच्ची कुछ महीनों की ही थी तो उसे तेज़ बुखार हुआ। लेकिन तुम्हारे पिताजी और दादी ने उसे डॉक्टर को दिखाने से मना कर दिया, क्योंकि वे एक बेटी के इलाज पर पैसे खर्च नहीं करना चाहते थे। मैंने उन दोनों को समझाने की बहुत कोशिश की लेकिन वे नहीं माने। आखिर में तुम्हारी बड़ी बहन बिना इलाज के कुछ दिनों में चल बसी। उसकी मृत्यु का दुख मुझे आज तक सालता है। लेकिन दादी और पिताजी को लगा कि उनके सिर से बोझ कम हो गया। यह कहते-कहते मिक्कू की मां की आंखों से आंसू बहने लगे।

मां ने अपने आंसू पोंछे और आगे बताया कि तुम्हारे पैदा होने के समय मैं तुम्हारी नानी के घर चली गई और वहीं पर तुम्हें जन्म दिया। वहां से संदेश भिजवा दिया कि लड़का हुआ है। लेकिन ये बात ज़्यादा दिन तक छिपी नहीं रह सकती थी कि तुम एक लड़की हो और उन दोनों को आखिर पता चल गया। लेकिन गांव में बेटा पैदा होने की खुशी में मिठाई बंट चुकी थी। इसलिए तुम्हारी दादी और पिताजी ने किसी को सच नहीं बताया और तुम्हें लड़के जैसे कपड़े पहनाने और बाल रखने का हुक्म दे दिया। इन दोनों ने मुझे बोल दिया था कि जैसे ही तुम 14-15 साल की हो जाओगी, तुम्हें तुम्हारी नानी के घर वापस भेज देंगे और वहीं से तुम्हारी शादी कर दी जाएगी। मैं यह सब बता कर तुम्हारा दिल नहीं दुखाना चाहती थी।

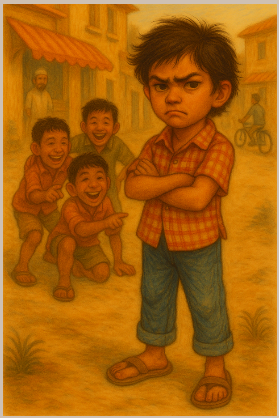

मिक्कू ये बातें सुन कर हैरान थी। उसने मां से पूछा, “मां! तुम तो मुझे इतना प्यार करती हो, दादी और पिताजी मुझसे प्यार क्यों नहीं करते हैं?” मां ने रोते-रोते बताया कि तुम्हारी दादी और पिताजी को वारिस चाहिए था, मतलब लड़का चाहिए था, जो उनके वंश को आगे बढ़ाए। ये बातें सुनकर मिक्कू को गुस्सा भी आ रहा था और रोना भी। वह घर से बाहर आ गई।

मिक्कू सोचने लगी कि वह ऐसा क्या करे जिससे सिर्फ दादी और पिताजी ही नहीं, बल्कि हर वो व्यक्ति जो लड़कियों से नफरत करते हैं, जिन्हें यह भ्रम हो कि लड़कियां कुछ नहीं कर सकतीं, उनके इस भ्रम को तोड़ सकूं। तभी उसे अपनी दूर के रिश्ते की मीना दीदी की याद आई। उसी के गांव में दूसरी गली में उसकी मीना दीदी रहती थीं। वह भागी-भागी उनके घर गई और दरवाज़े पर दस्तक दी। मीना दीदी ने दरवाज़ा खोला तो मिक्कू को देखकर बहुत खुश हुई और कहा कि अरे मिक्कू बहुत दिन हो गए तुम्हें देखे। कहां से आ रहे हो? तभी उन्हें ध्यान आया कि उन्होंने मिक्कू को अंदर नहीं बुलाया तो हंसते हुए बोलीं, “मैं भी कैसी पागल हूं। तुम्हें बाहर ही खड़ा कर रखा है। आओ अंदर आओ।” मिक्कू अंदर आ गई और दीदी के सामने रोने लगी। दीदी ने पूछा कि क्या हुआ मिक्कू तुम रो क्यों रहे हो? सब ठीक तो है ना। मिक्कू की हालत देख दीदी परेशान हो गईं।

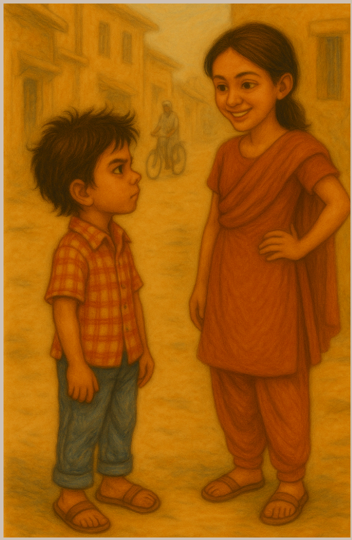

रोते-रोते मिक्कू ने दीदी को बताया कि दीदी मैं एक लड़का नहीं बल्कि लड़की हूं। दीदी अचरज से मिक्कू को देख रही थीं। उनकी आंखों में आश्चर्य और सवाल दोनों थे। उन्होंने मिक्कू से कहा कि तुम अगर लड़की हो तो तुम्हारे घर वालों ने सबसे यह बात क्यों छुपाई? मुझे सारी बात खुल कर बताओ। मिक्कू ने दीदी को सारी बात बताई। मीना दीदी ने पूछा कि तुम्हारी दादी और पिताजी ने ऐसा क्यों किया तो मिक्कू ने बताया कि उन्हें वंश चलाने वाला वारिस चाहिए था। मिक्कू की बातें सुन कर मीना दीदी को बहुत दुख हुआ। वे उसके दुख को समझ पा रही थीं। उन्होंने उसे चुप कराया तभी मिक्कू ने पूछा, “दीदी! आप तो पुलिस में हो, क्या आप मेरी मदद करोगी?” मीना दीदी ने प्यार से कहा, “ये भी कोई पूछने की बात है, बिल्कुल करूंगी। तुम्हारे साथ बहुत गलत हुआ है। मैं तुम्हारे पिताजी और दादी को जेल में बंद कर दूंगी।“ मिक्कू ने उदास होते हुए कहा कि नहीं दीदी, उन्हें जेल में मत डालना। बस उन्हें यह समझा दो कि लड़कियां किसी से कम नहीं होतीं। मैं भी आपकी तरह अपने परिवार का नाम रौशन कर सकती हूं। मैं चाहती हूं कि मेरी दादी और मेरे पिताजी भी मुझे प्यार करें, जैसे मेरी मां मुझे लड़की होने के बावजूद करती हैं। मैं दुनिया में लड़की बन कर ही जीना चाहती हूं। दीदी ने उसका हौसला बढ़ाया और कहा कि ऐसा ही होगा।

मीना दीदी मिक्कू के साथ उसके घर गईं और मिक्कू के पिताजी और दादी को बुलाया। मीना दीदी को देख कर दादी और पिताजी उनका हाल-चाल पूछने लगे। साथ में मिक्कू को देखकर उन्होंने पूछा, “मिक्कू तुम यहां क्या कर रहे हो? तुम तो मेला देखने गए थे। कुछ हुआ है क्या?” मिक्कू की जगह मीना दीदी ने उनकी बात का जवाब दिया और कहा कि मैं आप दोनों से कुछ ज़रूरी बात करने आई हूं। यह सुनकर दोनों परेशान हो गए, उन्हें लगा कि मिक्कू ने कोई शरारत की है। “क्या हुआ मीना,

मिक्कू ने कुछ किया है क्या?" मीना दीदी ने कड़क आवाज़ में कहा कि मिक्कू ने मुझे सब कुछ बता दिया है। आप दोनों ने इसके साथ जो भेदभाव किया वह बिलकुल ग़लत है। आपने एक लड़की को लड़का बन कर जीने को मजबूर किया है। यह सब सुनकर दादी और पिताजी घबरा गए। डरते-डरते पूछा कि यह सब किसने कहा। मीना दीदी ने फिर कड़क आवाज़ में कहा कि किसी ने भी कहा हो। आप यह बताइए कि यह सब सच है या नहीं? मिक्कू की दादी और पिताजी ने नज़रे झुका लीं लेकिन दबे स्वर में कहा कि, "हां, हमने ऐसा किया।" मीना दीदी ने कहा कि मैं आपको एक मौका देना चाहती हूं। वह अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाई थी कि दादी ने पूछा, "क्या तुम हमें जेल में नहीं डालोगी?" तो मीना दीदी ने कहा कि मैं आपको एक और सच्चाई बताती हूं। मिक्कू आप दोनों से बहुत प्यार करती है। वह नहीं चाहती कि आपके साथ कुछ बुरा हो। यह सुनकर दादी और पिताजी का चेहरा आत्मग्लानि से भर गया।

मीना दीदी ने कहा, "मैं आप दोनों को जेल में डाल सकती हूं। लेकिन मिक्कू ने मुझे ऐसा करने से मना किया है। आपके ऐसे व्यवहार के बाद भी वह आप दोनों से बहुत प्यार करती है।" यह सुन कर दादी और पिताजी बहुत शर्मिंदा हुए। दोनों ने मिक्कू से माफी मांगी और कहा कि आज से तुम लड़की की तरह ही रहोगी और हम अपनी बेटी को पूरा प्यार और सम्मान देंगे। यह सुन कर मिक्कू बहुत खुश थी। अब उसे मजबूरी में लड़के के वेश में नहीं रहना होगा। उसने मीना दीदी को धन्यवाद दिया तो दीदी ने कहा, "यह सब तुम्हारी हिम्मत के कारण हुआ है। तुमने सच जानने के बाद अपने जीवन को बदलने और अपने पिताजी और दादी को समझाने के बारे में सोचा। तुमने बिल्कुल ठीक सोचा कि लड़कियां कुछ भी कर सकती हैं और हमें ही समाज की सोच को बदलना होगा।" मिक्कू दीदी की बातें सुनकर बहुत खुश हुई और धन्यवाद देती हुई उनके गले लग गई।

सोनम कुमारी

कक्षा: 10वीं
उम्र: 15 वर्ष
गांव: सहनौली
शौक: नृत्य, पढ़ाई और चित्र बनाना
सपना: डॉक्टर बनना

"गवाक्ष पाठशाला की पुस्तक में मेरी कहानी का शामिल होना मेरे लिए गर्व का क्षण है। मैं डॉक्टर बनने का सपना देखती हूं और मुझे नृत्य, पढ़ना और चित्र बनाना बहुत पसंद है। गवाक्ष के शिक्षकों का सहयोग और यहाँ का सकारात्मक माहौल मुझे निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।"

5

मेरे पास टाइम मशीन होती

-कोमल कुमारी-

क्या आपने अपने जीवन में कभी कोई ग़लती की है? अगर ग़लती की है, तो उससे क्या सीखा? ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं है जिसने अपने जीवन में कभी कोई ग़लती नहीं की। कोई अपने जीवन में ज्यादा ग़लती कर बैठता है तो कोई अपने जीवन में कम ग़लतियां करता है। मायने यह नहीं रखता कि ग़लतियां किससे हुई, क्यों हुई, कैसे हुई। मायने यह रखता है कि अपनी ग़लतियों से उन्होंने क्या-क्या सीखा है। इस कहानी में हम एक छोटी बच्ची की बात करेंगे जो कि नौ वर्ष की है। उसका चेहरा गोरा तथा गोल है और उसके बाल छोटे-छोटे हैं। उसके परिवार में उसके माता-पिता तथा एक छोटा भाई रहता है। उसके पिताजी विदेश में रहते हैं। वहां पर ही गाड़ी चलाकर पैसा कमाते हैं तथा महीने की दो तारीख को घर के खर्चों के लिए पैसे भेजते हैं। पैसा बहुत कम होता है, इससे ज़रूरी खर्चों की पूर्ति भी बड़ी मुश्किल से होती है।

इस लड़की का नाम मुन्नी है। मुन्नी को ताजी हवा में बैठकर पशु पक्षी के साथ ज्यादा से ज्यादा समय व्यतीत करना बहुत पसंद है। जब वह स्कूल जाती है तो उसका मुंह ऐसा हो जाता है मानो उसे किसी ने डांटा हो। वह जब भी स्कूल जाती है तो बस उसे इंतजार रहता है कि कब स्कूल की घंटी बजे और कब वह घर पर आकर अपने पशु-पक्षियों के साथ खेले। उसे स्कूल जाना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता है। उसकी माँ उसे बहुत समझाती हैं कि बेटी तुम्हारे पिता विदेश में रहकर दिन रात कमाकर तुम्हारी स्कूल फीस भरने के लिए पैसे भेजते हैं। परन्तु उसे कोई फर्क नहीं पड़ता, मानो एक कान से सुनी, दूसरे कान से बात निकाल दी। वह अपने छोटे भाई सोनू के साथ भी नहीं खेलती थी। वह बस पशु पक्षी के साथ समय व्यतीत करना पसंद करती थी। एक दिन वह घर से बाहर खेलने के लिए जाती है तभी उसकी माँ तेज स्वर में कहती है, “मुन्नी रुको! तुम अपने भाई को अपने साथ कभी क्यों नहीं

खिलाती?” मुन्नी माँ की तरफ देखती रह गई, क्योंकि उसकी माँ आज तक उस पर ऐसे नहीं गुस्साई थी।

मुन्नी चुपचाप सोनू को गोद में उठाकर बाहर चली जाती है। वह जब पशु पक्षियों और सोनू के साथ खेल रही थी तभी अचानक सोनू दूसरी तरफ जाने लगा। मुन्नी सोनू के पीछे भागी उसने देखा कि सोनू के दो तीन कदम आगे ही एक मशीन रखी हुई थी। मुन्नी मशीन को ध्यान से देखती है, उसे कुछ समझ नहीं आता कि किस चीज़ की मशीन है। मुन्नी सोनू को उठाकर अपने घर की तरफ चल देती है। रास्ते

में उसके दिमाग में उस मशीन को खोलने के विचार आ रहे थे। मुन्नी घर आ जाती है। माँ मुन्नी से कुछ कहती हैं परन्तु वह जैसे अपनी माँ की बात सुन ही न रही हो। उसके दिमाग में मशीन के चित्र घूम रहे थे। वह खाना खाती है और सोने के लिए चली जाती है। वह सोने की बहुत कोशिश करती है परन्तु उसे नींद नहीं आ रही थी। उसके दिमाग में बार-बार उसी मशीन के ख्याल आ रहे थे। वह वहां पर जाने की सोच लेती है तथा धीरे से अपना पैर पलंग से नीचे रखती है और धीरे से दरवाजा खोलकर उसी जगह पर चली जाती है।

वह उस मशीन को खोलकर देखना भी चाहती है परन्तु उसे बहुत डर भी लग रहा था। उसने अपनी आंखें बंद की और तेजी से उस दरवाजे को खोलकर उसके अंदर चली जाती है। उसके अंदर बहुत सारे बटन थे उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। वह एक लाल रंग का बटन दबाकर सोचती है इसमें तो कुछ भी नहीं हो रहा है। परन्तु तभी उस मशीन में से आवाज आती है कि क्या तुम अपना भूतकाल देखने के लिए तैयार हो? उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। अब बस वह अपने घर जाना चाहती थी तब ही मशीन की स्क्रीन पर लिखा आया कि तुम किससे मिलना पसंद करोगी? उसने डरते-डरते पापा बोला तथा वह मशीन उसे चार साल पुराने भूतकाल में ले गई। मशीन में से आवाज आई कि आप बाहर जा सकते हैं। वह डरते-2 बाहर जाती है तथा देखती है कि उसके पिता कितनी मुश्किल से दिन रात कमाते हैं और यह देखकर उसकी आंखों से आंसू आने लगते हैं तथा उसे अपनी माँ की बात याद आ जाती है। “मुन्नी बेटा तुम्हारे पापा दिन रात कमाकर तुम्हारी फीस भरते हैं। बेटा कम से कम उनके लिए ही पढ़ लिया करो।” उसे ये बात अब समझ आ गई थी। उसने अब पढ़ना शुरू कर दिया। अब तो माँ को भी उसके ऊपर शक हो रहा था कि यह मुन्नी है या और कोई। मुन्नी पूरे साल खूब पढ़ती है तथा परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करती है।

कोमल कुमारी

कक्षा: 10वीं
उम्र: 14 वर्ष
गांव: सहनौली
शौक: अंग्रेज़ी पढ़ना, पढ़ाई करना, चित्रकला और नृत्य
सपना: डॉक्टर बनकर लोगों की सेवा करना

“गवाक्ष पाठशाला की पुस्तक का हिस्सा बनना मेरे लिए सम्मान की बात है। मुझे अंग्रेज़ी पढ़ना, चित्र बनाना, नृत्य करना और पढ़ाई करना बहुत पसंद है। मैं डॉक्टर बनकर दूसरों की सेवा करना चाहती हूं। गवाक्ष के मार्गदर्शन और सहयोग से मुझे हर दिन बेहतर बनने की प्रेरणा मिलती है।”

6

बिना पंखों के उड़ना

-रेश्मा चौहान-

शेजल एक ऐसी लड़की थी जो बचपन से ही चिड़चिड़ी और गुस्सैल मिज़ाज की थी। उसके ऐसे व्यवहार के पीछे एक बड़ी वजह थी – उसे बेसब्री से अपने 13वें जन्मदिन का इंतजार था। जब वह छोटी थी, तो अक्सर अपने दादा जी से पूछती, “जब पक्षी उड़ सकते हैं, तितलियाँ उड़ सकती हैं, तो मैं क्यों नहीं?” तब दादा जी ने मुस्कराते हुए कहा था, “जब तुम 13 साल की हो जाओगी, एक परी खुद तुम्हें इसका उत्तर देगी।”

वह दिन आखिरकार आ गया। शेजल की बेचैनी चरम पर थी – उसे डर भी था, कहीं दादा जी ने झूठ तो नहीं बोला? अगर वह परी नहीं आयी तो?

जैसे ही शाम हुई और जन्मदिन का जश्न शुरू हुआ, सबने उसकी सुंदरता की तारीफ की – नीली आँखें, सुनहरे बाल – पर शेजल का मन तो बस एक बात में अटका था,

“क्या वह परी आएगी?” केक काटते हुए भी उसने आंखें बंद कर भगवान से यही इच्छा मांगी। लेकिन रात बीत गई, सब चले गए और वह उदास होकर अपने कमरे में चली गई।

अचानक, आधी रात को घुंघरुओं की आवाज़ आई और एक स्त्री उसके कमरे में दाखिल हुई। शेजल गुस्से में चिल्लाई, “तुम मेरे कमरे में क्या कर रही हो?” फिर जब वह स्त्री अपने असली रूप में आई – तो वह और कोई नहीं, बल्कि वही परी थी, जिसका वादा दादा जी ने किया था।

परी ने पूछा, “तुम सबसे इतने गुस्से से क्यों बात करती हो?” शेजल का दिल भर आया। वह बोली, “मुझे नहीं पता। शायद मैं खुद से भी नाराज़ हूँ।” फिर परी ने उसे समझाया कि उसकी माँ अकेली हैं, और उन्हें उसकी ज़रूरत है।

परी ने उसे एक प्रस्ताव दिया – “मैं तुम्हारी एक इच्छा पूरी कर सकती हूँ, पर तुम्हें उसकी क़ीमत चुकानी होगी।” शेजल बोली, “मुझे पंख चाहिए, मुझे उड़ना है।” परी ने मुस्कराते हुए कहा, “तुम्हें पंख तभी मिलेंगे जब तुम सबके साथ अच्छा व्यवहार करोगी और ज़रूरतमंदों की मदद करोगी।”

शेजल ने वादा किया और सच में अपने व्यवहार में बदलाव लाई। वह दयालु बन गई, सबकी मदद करने लगी। पर फिर एक हादसा हुआ — उसके एक अच्छे दोस्त की दुर्घटना में मृत्यु हो गई। इस घटना के बाद वह फिर से गुस्सैल और उदास हो गई।

एक दिन उसने फिर से परी को पुकारा और अपनी मुश्किल बताई, तो परी ने उसे एक वरदान दिया — "जब भी तुम्हें गुस्सा आएगा, मेरी आत्मा तुम्हारे भीतर आ जाएगी, और तुम शांत रह सकोगी।"

समय बीतता गया, शेजल अब सबकी प्रिय बन चुकी थी। उसके पास जो चीज़ें थीं उनमें से अपने लिए गैर-ज़रूरी चीज़ें वह ज़रूरतमंदों को देने लगी। अब परी अपना वादा निभाने लौटी। जब शेजल ने पंख मांगे, तो परी ने एक जादुई शीशा दिखाया — जिसमें शहरभर के लोग शेजल की तारीफ कर रहे थे। एक बूढ़ी दादी बोली, "शेजल मेरी बुढ़ापे की लाठी है।"

शेजल की आँखें भर आईं। वह बोली, "अब मुझे कहीं नहीं जाना, मुझे अपनों के बीच रहना है।" परी मुस्कराई और बोली, "तुम खुद सबकी नज़रों में एक परी बन चुकी हो — जिसे पंखों की ज़रूरत नहीं।"

हम सभी के भीतर उड़ने की क्षमता होती है, बस हमें अपने भीतर झांककर देखने की ज़रूरत होती है। असली उड़ान पंखों से नहीं, बल्कि अच्छे कर्मों और सच्चे दिल से मिलती है। हमें सदैव अच्छे कर्म करने चाहिए, क्योंकि ऊपर बैठा वो सर्वशक्तिमान सब देखता है।

रेश्मा चौहान

कक्षा: 10वीं
गांव: लिखी
शौक: नृत्य, पढ़ना, चित्र बनाना और गायन
सपना: न्यूरोलॉजिस्ट (मस्तिष्क रोग विशेषज्ञ) डॉक्टर बनना

"गवाक्ष पाठशाला का सहयोग मेरे लिए बहुत मायने रखता है। हरदीप सर के मार्गदर्शन में मैं अपने न्यूरोलॉजिस्ट बनने के सपने की ओर बढ़ रही हूं। नृत्य, पढ़ाई, चित्रकला और गायन के माध्यम से मुझे अपने उपचार के जुनून को आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिलती है!"

7

एक चॉकलेट की दुनिया

-कुमकुम चौहान-

लोगों ने हमेशा पथरीले रास्तों और ईंटों की सड़कों पर चलना सीखा है। लेकिन उस दिन कुछ अलग था। मेरे सामने एक ऐसा रास्ता था जिसे देखकर दिल ने कहा – "कहीं यह खाने लायक तो नहीं?"
मैंने झिझकते हुए पैर रखा, और अगले ही पल... मैं उसे खाने लगी। उसका स्वाद चॉकलेट जैसा था – मीठा, मुलायम, और बिल्कुल असली। शायद मुझे भूख लगी थी, या शायद वो रास्ता ही जादुई था।

मैंने चलते-चलते खुद को एक ऐसी दुनिया में पाया, जो पहले सिर्फ कल्पनाओं में थी – एक चॉकलेट की दुनिया।

यहाँ हर चीज़ चॉकलेट से बनी थी – घर, पेड़, रास्ते, यहाँ तक कि आसमान में झूलता एक इंद्रधनुष भी। लेकिन यह कोई साधारण इंद्रधनुष नहीं था – वह बच्चों को अपनी तरफ खींचता, जैसे उसके भीतर कोई रहस्य छिपा हो।

रंग-बिरंगी वादियों में बच्चे सफर कर रहे थे। पेड़ों पर चमचमाती कैंडी लटक रही थीं, और ज़मीन पर टॉफियाँ बिखरी थीं। मैं तो जैसे किसी मीठे सपने में थी।

मैंने दौड़ते-खेलते, खाते-हँसते बहुत समय वहाँ बिताया। थक कर मैं एक चॉकलेट के पेड़ के नीचे बैठ गई। मन ही मन एक विचार आया – "क्यों न मैं यहीं रह जाऊं?"

इसी सोच में थी कि अचानक मेरी नज़र ज़मीन पर पड़े एक चमकीले पत्थर पर गई। वह मामूली-सा दिख रहा था, लेकिन उसकी चमक अलग थी। जिज्ञासावश मैंने उसे उठाया और पास की झील में

डाल दिया।

जैसे ही पत्थर पानी में गिरा, झील की सतह काँपने लगी। अचानक एक तेज़ रौशनी फैली और चारों तरफ़ से एक तेज़ ध्वनि आई। वह सिर्फ एक पत्थर नहीं था — वह एक द्वार खोलने की चाबी था, जिसे सदियों से कोई छू नहीं पाया था।

और फिर... सब कुछ बदल गया।

मैं एक बार फिर किसी और ही जगह पहुँच गई — शायद उसी चॉकलेट की दुनिया का एक गहरा, रहस्यमय हिस्सा। वहाँ समय रुका हुआ था। सब कुछ शांत, ठहरा हुआ, और रहस्यमयी। लेकिन जैसे ही मैंने एक कदम आगे बढ़ाया, सब कुछ धुंधला हो गया।

जब मेरी आँखें खुलीं, मैं वापस अपने कमरे में थी।

क्या ये सपना था? या कोई असली अनुभव?

मुझे सिर्फ एक चीज़ याद थी — उस चमकीले पत्थर की शक्ति।

खुशी इस बात की थी कि मैंने वो दुनिया देखी। दुख इस बात का कि अब मैं दोबारा वहाँ नहीं जा सकती थी। और क्यों नहीं जा सकती? इसका राज मेरे दिल में बंद था — एक ऐसा राज जिसे मैं किसी से भी नहीं कह सकती थी।

कई दिन बीत गए, महीने गुज़र गए, साल निकल गए। पर उस दुनिया की मिठास और रहस्य आज भी मेरे मन में बसे हुए थे। हर रोज़ एक ही सवाल मन में गूंजता, - “क्या मैं फिर कभी उस दुनिया में जा पाऊँगी?” आख़िर एक दिन मैंने तय कर लिया — अब और इंतज़ार नहीं। मैं उस जगह पर दोबारा जाऊँगी।

मैं उसी रास्ते पर पहुँची जहाँ सब शुरू हुआ था। वहाँ अब ज़मीन साधारण लग रही थी — न चॉकलेट की सड़कों का कोई निशान था, न वो कैंडी के पेड़। सब कुछ बदल गया था।

तभी मेरी नज़र एक बूढ़ी औरत पर पड़ी। वह एक पत्थर पर बैठी थी, जैसे मेरा इंतज़ार कर रही हो। उसकी आँखों में रहस्य था, और चेहरा अनुभवों से भरा हुआ।

मैंने धीरे से पूछा, “क्या आप उस चॉकलेट की दुनिया को जानती हैं?”

उसने हल्की मुस्कान के साथ कहा, “जानती हूँ… और तुम भी उसे जानती हो। तुमने उसे देखा है। उस पत्थर को भी…”

मैं हैरान रह गई, “आपको कैसे पता?”

वह बोली, “क्योंकि मैं भी कभी उस दुनिया में गई थी। लेकिन अब वह रास्ता बंद हो चुका है। पत्थर का रहस्य अब सिर्फ एक जगह है — तुम्हारे दिल में। लेकिन संभालो, सबूत जल्दी खो जाते हैं।”

और जैसे ही उसने ये कहा — वह काँपने लगी और ज़मीन पर गिर पड़ी। उसकी साँसे थम गईं। उसके साथ ही वो आखिरी कड़ी — वो आखिरी सबूत — भी मुझसे छिन गया।

अब मेरे पास न वो पत्थर था, न रास्ता, न कोई और गवाह।

बस एक सवाल रह गया —
"क्या मैं फिर कभी उस चॉकलेट की दुनिया में जा पाऊँगी?"

कुमकुम चौहान

कक्षा: 11वीं
गांव: लिखी
शौक: योग
सपना: योग शिक्षक बनना

‘गवाक्ष पाठशाला की पुस्तक के लिए अपनी कहानी लिखना मेरे लिए एक सपने के सच होने जैसा है। मैं योग शिक्षक बनने की आकांक्षा रखती हूं और योग के फायदे दूसरों तक पहुंचाने का जुनून रखती हूं। योग के माध्यम से मुझे शांति और जीवन का उद्देश्य मिलता है।’

8

वीरान घर का रहस्य

-सुहाना राठौड़-

रात के सन्नाटे में, हजारों साल पुराने वीरान और बंद घर से रोने की आवाज़ें आने लगीं। उसी समय, पांच दोस्त—स्टैला, कैविन, सोफिया, निया और रॉबिन—रात के अंधेरे में एक बहुत बड़ा बैग लेकर जंगल की ओर जा रहे थे। वे बैग को बड़ी मुश्किल से घसीट रहे थे, मानो उसमें कोई बहुत भारी चीज़ रखी हो। जंगल में जानवरों की डरावनी आवाज़ें और पेड़-पौधों के तेज़ हिलने की सरसराहट माहौल को और भयानक बना रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे रात की खामोशी उनके कानों में कुछ फुसफुसा रही हो।

अचानक, एक लड़खड़ाती सी आवाज़ आई, “अरे! कहां जा रहे हो?” उन्होंने चारों ओर देखा, लेकिन वहां कोई नहीं था। तभी स्टैला बोली, “जल्दी करो, सुबह होने से पहले हमें यहां से निकलना है।”

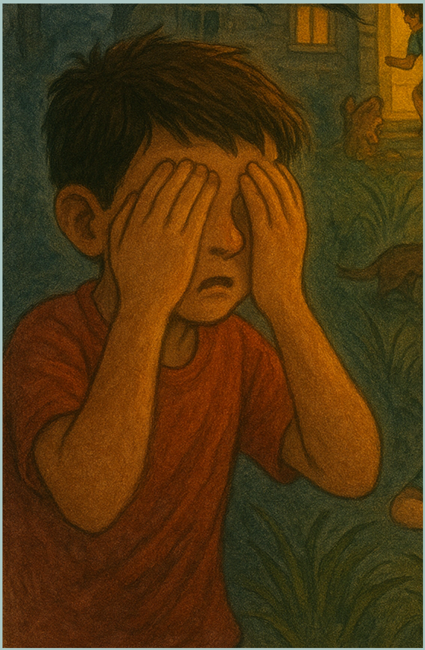

वे सभी बैग को घसीटते हुए आगे बढ़ने लगे। कैविन बोला, “मुझे लगता है हमें वापस चलना चाहिए, इसमें जान का खतरा है।” सोफिया भी सहमति में बोली, “हां, कैविन सही कह रहा है।” तभी निया गुस्से से चिल्लाई, “चुप हो जाओ तुम दोनों, मैंने पहले ही कहा था—जिसे डर लगता है, वो हमारे साथ न आए।”

फिर वही रहस्यमयी आवाज़ दोबारा आई, “मत जाओ, खतरा है।” इस बार रॉबिन डर गया और बैग छोड़कर भाग खड़ा हुआ। सबकी धड़कनें तेज़ हो गईं और पसीना आने लगा। तभी रॉबिन की चीख सुनाई दी, “आ... आ... आ...” स्टैला डरते हुए बोली, “हमें रॉबिन को ढूंढना चाहिए।” वे सब रॉबिन की तलाश में लग गए और बैग वहीं भूल गए।

रॉबिन को खोजते-खोजते वे एक पुरानी, सुनसान और डरावनी हवेली के पास पहुंच गए। वहीं रॉबिन बेहोशी की हालत में मिला। वे उसे होश में लाए और आगे बढ़ने लगे। निया बोली, “शायद हमें इस हवेली के अंदर जाना चाहिए।” तभी सोफिया अपनी जेब से एक कागज़ निकालते हुए बोली, “हां, हमें अंदर जाना ही होगा।” वे डरते-डरते घर के भीतर गए। भीतर जाते ही दरवाज़ा अपने आप बंद हो गया। उन्होंने दरवाज़ा खोलने की बहुत कोशिश की, लेकिन नाकाम रहे। हारकर वे वहीं लेट गए और थकान में सो गए।

सुबह जब वे उठे, तो एक आवाज़ गूंजी—“वैलकम टू हाइड एंड सीक गेम।” सबने एक-दूसरे की ओर देखा और पूछा, “ये क्या हो रहा है?” आवाज़ फिर आई, “तुम सब अब इस खेल में फंस चुके हो। जब तक ये खेल खेलोगे नहीं, बाहर नहीं जा सकते।” कैविन पूछ बैठा, “कौन हो तुम? और ये सब क्या है?” आवाज़ बोली, “इस खेल में दो राउंड होंगे। पहले राउंड का नाम है—जियो या मरो। इसमें तीन चांस होंगे। जो हारेगा, उसे मरना पड़ेगा।”

सभी घबरा गए। अब उन्हें एक-एक पासा दिया गया। पासा फेंकने पर जो नंबर आता, उस डिब्बे में जाकर टास्क पूरा करना होता।

स्टैला ने पासा फेंका—01 आया। उसे टास्क मिला कि जब तक बाकी को टास्क न मिल जाए, उसे लगातार लाल मिर्च खानी होगी। वह मिर्च खाते-खाते रोने लगी।

निया का नंबर 04 आया। उसे पांच घंटे एक बंद सफेद कमरे में रहना था। उसे अस्थमा था और वह डर गई। सोफिया ने उसे हौसला दिया तो वह चली गई।

फिर कैविन और रॉबिन ने पासा फेंका और उन्हें भी अपने टास्क मिले। अब बारी थी सोफिया की। वह डर रही थी, लेकिन उसका टास्क आसान निकला। सभी पहला राउंड पास कर गए।

अब आवाज़ आई, “अगली बार बच नहीं पाओगे।” उन्हें एक घंटे का आराम मिला। तभी रॉबिन ने

दीवार पर कुछ लिखा देखा, पढ़कर वह हंस पड़ा और उसमें नया हौसला आ गया। दूसरे राउंड से पहले रॉबिन ने आवाज़ से कहा, “इस बार हम शर्त रखेंगे। हमारी टीम और तुम्हारी टीम में मुकाबला होगा। खेल हमारा होगा।” आवाज़ बोली, “मंजूर है, बताओ क्या करना है।”

रॉबिन बोला, “हमें एक स्विमिंग पूल चाहिए। जो पानी में ज्यादा देर सांस रोककर रहेगा, वही जीतेगा। अगर तुम हारी तो हमें जाने दोगी।”

निया और कैविन हैरान थे, लेकिन रॉबिन ने ध्यान नहीं दिया। वह पूल में उतर गया और आवाज़ को भी बुलाया। जैसे ही आवाज़ ने पूल में उतरने की कोशिश की, रॉबिन बाहर आ गया। आवाज़ पानी में गई और ढेर सारे बुलबुले उठने लगे, फिर वह आवाज़ आनी बंद हो गई।
रॉबिन चिल्लाया, “हम जीत गए!”

सभी दोस्त उस वीरान हवेली से बाहर निकल भागे और जल्दी-जल्दी अपने घर लौटे। अब उन्होंने सीख लिया था—मुश्किलों से घबराना नहीं चाहिए, बल्कि उनका हल ढूंढना चाहिए।

सुहाना राठौड़

कक्षा: 9वीं
गांव: लिखी
शौक: नृत्य और चित्रकला
सपना: वकील बनना

“गवाक्ष पाठशाला के सहयोग से मैं अपने वकील बनने के सपने की ओर कदम बढ़ा रही हूं। नृत्य और चित्रकला मेरी रचनात्मकता और संकल्प को ताकत देते हैं। मैं आत्मविश्वासी हूं और अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए पूरी तरह केंद्रित हूं!”

9

सूटकेस की चाबी

-रजनीश कुमारी-

रामू के दो घर थे, जिनमें से पुराने घर में कई कमरे ऐसे थे जिनमें कोई नहीं जाता था। वह उन कमरों को अक्सर कौतुहल से देखा करता था। लेकिन घर में उन कमरों को कोई खोलने नहीं देता था। रामू उन कमरों को खोलना चाहता था। एक दिन रामू बाहर घूमने के लिए अपने दोस्त निमरत के साथ खेतों में गया। वह अपने दोस्त के साथ फसलों को निहारते हुए खेत की मेड़ों पर घूम रहा था। टहलते-टहलते उसे मिट्टी में कुछ दिखाई दिया। मिट्टी हटा कर उसने देखा कि वह कोई साधारण चीज़ नहीं बल्कि एक चाबी थी। वह समझ नहीं पाया कि यह चाबी कैसे और कहां से आई है। वहां और भी तो बच्चे थे, लेकिन ये चाबी उसे ही क्यों मिली? दिमाग में चल रही उधेड़बुन को सुलझाते हुए उसने चाबी को अपनी पैंट की जेब में रख लिया और सोचता रहा कि यह चाबी किस ताले की है। तभी सूरज ढलने लगा और वह अपने दोस्त निमरत के साथ घर आ गया।

रात में रामू की मां सोमवती ने उससे कहा कि बेटा खाना खा लो। खाना खाते हुए भी रामू सोचता रहता है कि इस चाबी से अपने पुराने घर में दादा जी वाले कमरे के ताले को खोल कर देखूंगा। मां की बात मान कर रामू खाना खाकर सो जाता है।

अगले दिन सूरज निकलता है और रामू सुबह होते ही नहा-धोकर तैयार हो जाता है। फिर वह अपने पुराने घर गया और दादाजी के कमरे के सामने खड़ा हो गया। कमरे के दरवाजे पर मकड़ी के बड़े-बड़े जाले लगे थे और खूब सारी धूल जमी हुई थी। दरवाजे की चौखट में दीमक भी लगी हुई थी। उसने ताले में चाबी लगाई और ताला खुल गया। रामू के लिए यह एक चमत्कार जैसा था कि रास्ते में मिली चाबी दादाजी के कमरे की निकली। वह कमरे के अंदर गया। कमरे में भी हर तरफ मकड़ी के जाले लटक रहे थे और बहुत धूल थी। कमरे की छत थोड़ी टूटी हुई थी और वहां से प्रकाश अंदर आ रहा था। कमरे में एक सूटकेस रखा हुआ था जो बहुत ही पुराना था और उसमें पुराने जमाने का ताला लगा हुआ था। कमरे के कोने में एक ईंट पड़ी हुई थी। रामू ने ईंट मार कर सूटकेस का ताला तोड़ दिया और उसे खोला। सूटकेस में दादाजी का टूटा हुआ चश्मा, घड़ी और कुछ सामान था। रामू ने दादाजी के सारे सामान को हाथ में लेकर देखा और फिर उस सूटकेस में से दादाजी की घड़ी अपने पास रख ली और बाकी सामान सूटकेस में बंद कर वापस रख दिया और कमरे से बाहर निकल कर फिर से दरवाजा बंद करके ताला लगा दिया।

अगले दिन से रामू ने दादाजी की घड़ी को पहनना शुरू कर दिया। जब भी वह घड़ी पहने रहता उसे ऐसा लगता मानो दादाजी उसके आसपास हैं। शाम को रामू अपने दोस्त निमरत के साथ मेले में गया। वहां उन दोनों का आइसक्रीम खाने का मन हुआ। आइसक्रीम खाने की बात सोचते हुए उसने अनजाने में ही घड़ी के डायल पर अपनी उंगलियां फेरीं। अचानक घड़ी की सूई में तेज़ आवाज़ हुई – कट-कट-कट... आवाज़ बंद करने के लिए उसने जैसे ही डायल के किनारे वाले गोले को दबाया तो आवाज़ रुक गई। लेकिन तभी उसने देखा कि आवाज़ के साथ-साथ उसके आस-पास के सभी लोग रुक गए हैं। मानो पूरी दुनिया ही रुक गई हो और उसके हाथों में आ गई हो। रामू ने कुछ पल तो अचरज से इधर-उधर देखा फिर उसकी नज़र आइसक्रीम के ठेले पर गई। उसने ढक्कन खोल कर दो आइसक्रीम निकाली और वापस अपने दोस्त निमरत के पास खड़ा हो गया। उसने घड़ी के डायल के किनारे वाले गोले को दोबारा दबाया तो घड़ी चलने लगी और उसके साथ-साथ आस-पास की दुनिया भी वापस सजीव हो गई।

रामू घड़ी के चमत्कार को समझ गया और वह मुस्कुराने लगा। तभी उसे बड़ी बहन के पुकारने की आवाज़ सुनाई दी जो ज़ोर-ज़ोर से उसका नाम ले रही थी और उससे कह रही थी कि “नींद में क्यों मुस्कुरा रहा है? जल्दी से उठ कर हाथ-मुंह धो ले और नाश्ता करने नीचे आ जा।” बड़ी बहन की बातें सुनकर रामू ने आंखें खोलीं तो देखा वह अपने बिस्तर पर सो रहा था और उसके हाथ में वह चाबी थी जो उसे खेतों में टहलते हुए मिली थी।

रजनीश कुमारी

कक्षा: 10वीं
गांव: लिखी
शौक: चित्रकला और नृत्य
सपना: नेत्र रोग विशेषज्ञ (आंखों की डॉक्टर) बनना

“मुश्किलों के बावजूद, गवाक्ष पाठशाला के समर्थन से मैं बड़े सपने देखती हूं। एक अकेली मां, जो सीमित साधनों में अपनी तीन बेटियों को पाल रही है, मैं दृढ़ निश्चय से नेत्र विशेषज्ञ बनने की कोशिश कर रही हूं। चित्रकला और नृत्य मेरी सफलता की आग को और तेज करते हैं।”

10

अलादिन का चिराग

-टिंकू राठौड़-

एक 18 साल का लड़का था, जिसकी इस दुनिया में सिर्फ माँ थी। वह अपनी माँ से बहुत प्यार करता था। वे दोनों अपने जीवन में बहुत खुश थे। वह दिन में काम करता और रात को थका-हारा घर वापस आता।

एक दिन वह अपने काम से बहुत थका हुआ और चिंता में डूबा हुआ घर आया। वह अपनी माँ से बिना बोले कमरे में जाकर सो गया। उसकी माँ ने उसे आवाज दी – अंशु, अंशु! पर वो सो चुका था। उसकी माँ अपने कमरे में जाकर अंशु के बारे में सोचने लगी कि “अंशु के साथ क्या हुआ है?’ और यह सोचते-सोचते सो गई।

“अंशु बेटा, अंशु!” आवाज आई। “जी पिताजी!” अंशु ने जवाब दिया। उसके पिताजी ने उसे बताया कि घर के दाईं ओर जो बाज़ार है, वहां हमारी पुरानी दुकान के नीचे कुछ दबा हुआ है। तुम उसे ले लेना पर अपनी माँ के अलावा किसी को मत बताना। वह सुबह जागता है और उस जगह पर खुदाई करने लगता है। वहां पर उसे एक अजीब सा चिराग दिखाई दिया। वह उसको उठाता है और घर आ जाता है। घर आकर वह उसे अपनी माँ को दिखाता है।

अंशु चिराग को साफ करने लगता है, उसमें से एक अजीब सा इंसान निकलता है। अंशु पूछता है, “तुम कौन हो?” वह बताता है कि मैं एक जिन्न हूं। तुम मुझे कोई तीन इच्छा बताओ, मैं उन्हें पूरी करूंगा। अंशु को विश्वास नहीं हुआ। उसने जिन्न को आजमाने के बारे में सोचा, उसने कहा कि मुझे एक अच्छा सा घर चाहिए। ऐसा कहते ही उसका घर एक सुंदर से घर में बदल गया। जिन्न ने उससे दूसरी इच्छा माँगने को कहा। अंशु ने कहा कि मुझे मेरी माँ के लिए एक सुंदर सी साड़ी चाहिए तो साड़ी आ गई। अब अंशु को लालच आ गया। उसने तीसरी इच्छा बताई कि मुझे तीन और चीज़ें माँगनी हैं। फिर उसने कभी पैसे तो कभी कुछ और माँगना शुरू किया और हर तीसरी इच्छा में तीन और चीज़ें माँगने की इच्छा करता।

उसकी माँ ने कहा कि बेटा लालच मत करो, लालच करना बुरी बला होती है। लेकिन अंशु ने माँ की बात नहीं मानी। तंग आकर माँ घर छोड़कर चली गई। कुछ दिन बाद खबर आती है कि उसकी माँ अब इस दुनिया से जा चुकी है। घर छोड़कर जाने के बाद उनका ट्रेन से एक्सिडेंट हो गया और वो इस दुनिया को छोड़कर चली गईं।

अंशु ने जिन्न से अंतिम तीसरी इच्छा में कहा मुझे मेरी माँ वापस चाहिए। जिन्न ने उस इच्छा को पूरा करने से मना कर दिया। यह उसके नियमों के विरुद्ध था। अंशु को यह सुनकर गुस्सा आया और उसने गुस्से में चिराग को समुद्र में फेंक दिया। अब रोने के अलावा उसके पास कोई उपाय नहीं था। उसे अपनी गलती पर पछतावा हो रहा था।

टिंकू राठौड़

कक्षा: 7वीं
गांव: लिखी
शौक: चित्रकला
सपना: डॉक्टर बनना

“गवाक्ष पाठशाला मुझे अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है! चित्रकला से मैं अपनी कल्पनाओं को जीवंत रूप देता हूं। मैं बड़े होकर डॉक्टर बनने का सपना देखता हूं। हर नए अवसर के साथ सीखने और आगे बढ़ने के लिए मैं उत्साहित हूं।”

11

जादुई चट्टान

-राधिका तंवर-

एक चट्टान थी, जिसके बारे में कहा जाता था कि जो भी वहां गया, कभी लौटकर वापस नहीं आया। लोग कहते थे कि वह चट्टान एक निश्चित दूरी तक दिखती है, उसके बाद अचानक गायब हो जाती है।

उसी शहर में एक 17 साल की लड़की रहती थी — एक ऐसे घर में जन्मी, जहां लड़कियों को घर से बाहर कदम रखने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन उसके सपने बड़े थे, वह आसमान छूना चाहती थी। एक दिन उसने खुद से कहा, "मैं भी उस चट्टान को देखना चाहती हूं, जहां से कोई लौटकर नहीं आता।" यह सोचते हुए वह अपने कमरे में गई, एक पुरानी किताब उठाई और पढ़ने लगी। पढ़ते-पढ़ते उसकी नजर एक चित्र पर पड़ी — एक पर्वत की चोटी पर चढ़ती हुई लड़की का चित्र। उसे देखकर वह अपने सपनों में खो गई।

अचानक वह चट्टान के सामने पहुंच गई — वही रहस्यमयी, जादुई चट्टान। वह कुछ देर तो समझ ही नहीं पाई कि ऐसे कैसे सोचने भर से वह चट्टान के सामने पहुंच गई। फिर उसने जानना चाहा कि आखिर इस चट्टान के उस पार ऐसा क्या है, जो लोगों को लौटने नहीं देता। उसने साहस के साथ चढ़ाई शुरू की। लेकिन जैसे ही वह आगे बढ़ी, एक बड़ा पत्थर उसकी ओर लुढ़कता हुआ आया। उसने मुश्किल से खुद को बचाया। डर के बावजूद वह नहीं रुकी, और अंततः वह चोटी के बिल्कुल करीब पहुंच गई।

जैसे ही उसने आखिरी कदम चोटी पर रखा — सब कुछ बदल गया।

वह एक अद्भुत दुनिया में पहुंच चुकी थी। वहां सब कुछ उसकी दुनिया से बिल्कुल अलग था।

एक विशाल महल, एक शक्तिशाली राजा — लेकिन कोई रानी नहीं। वहां के लोगों में कोई भावना नहीं थी — न प्यार का अनुभव, न नफ़रत का एहसास। कहा जाता था कि यह दुनिया श्रापित है — जब तक राजा को एक ऐसी रानी न मिल जाए जो भावनाएं महसूस कर सके, तब तक ये दुनिया यूं ही बेरंग रहेगी। अजीब बात ये थी कि राजा खुद प्यार और नफ़रत को महसूस कर सकता था।

लड़की ने गौर किया कि वहां सभी ने एक जैसे कपड़े पहने हुए थे — और चमत्कार यह हुआ कि उसके कपड़े भी अचानक वैसे ही हो गए। वह सब कुछ आश्चर्य से देख रही थी। कई दिन बीते। एक दिन वह राजा के सामने पहुंची। उसने कहा, "मुझे लग रहा है कि आप उदास हैं।"

राजा चौंक गया — क्योंकि वह पहली इंसान थी, जो कुछ महसूस कर पा रही थी।

उसे अपने पिता की बात याद आई – "जो तुम्हारे अलावा इस दुनिया में भावनाएं अनुभव कर सके, वही तुम्हारी रानी बनेगी।" राजा ने निश्चय किया कि वही लड़की उसकी रानी बनेगी। राजा ने लड़की को सारी बात बताई और लड़की से अनुरोध किया कि उसके देश को भावना-शून्य से वापस संवेदनशील बनाने के लिए वह उसका साथ दे और राजा से विवाह कर ले। पूरे देश की भलाई के लिए लड़की मान गई और विवाह की तैयारियां शुरू हो गईं। राजा ने उससे कहा कि वह तो हिम्मत हारने लगा था लेकिन उसके पूर्वजों ने कहा था कि एक दिन एक लड़की आएगी जिसके अंदर भावनाएं होंगी। फिर मैंने ठान लिया कि मैं निराशा की जगह आशा को अपनाऊंगा और अपनी रानी की प्रतीक्षा करूंगा। तुम्हारे आने से ये बात सच हो गई कि निराश होने से बेहतर है आशावान बने रहना।

दोनों के विवाह का समय हुआ जैसे ही वह वरमाला डालने वाली थी ठीक उसी वक्त, एक आवाज़ गूंजी – "अमिशा! अमिशा!" लड़की ने चौंककर चारों ओर देखा। सब कुछ धुंधला होने लगा।

अचानक उसकी आंख खुली – वह अपने कमरे में थी, किताब उसके हाथ में थी। वह मुस्कराई, क्योंकि उसे समझ आ गया कि यह सब एक सपना था।

वह फिर से किताब पढ़ने में मग्न हो गई। लेकिन अब उसकी आंखों में एक अलग चमक थी – जैसे वह जान गई हो कि सपने सिर्फ नींद में ही नहीं देखे जाते, उन्हें जीने की भी हिम्मत चाहिए। उसने खुद से वादा किया कि एक दिन वह सच में अपने सपनों की उस चट्टान तक पहुंचेगी और लौटकर भी आएगी – अपने जैसी और लड़कियों को यह बताने के लिए कि दुनिया कितनी भी सख्त क्यों न हो, हौसले अगर सच्चे हों तो हर जादू हकीकत बन सकता है। निराशा से बेहतर है आशावान बने रहना।

राधिका तंवर

कक्षा: 10वीं
गांव: लिखी
शौक: पढ़ाई
सपना: आईएएस अधिकारी बनना

गवाक्ष पाठशाला मेरी राष्ट्र सेवा की इच्छा को प्रबल करती है। मैं आईएएस अधिकारी बनने के लिए मेहनत से पढ़ाई कर रही हूं और बदलाव लाने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं। सीखने के प्रति मेरा प्रेम मुझे अपने सपनों को हासिल करने के लिए प्रेरित करता है।

12

बोलने वाला पेड़

-विकांत चौहान-

एक बार की बात है, मैं एक घने और रहस्यमय जंगल में गया था। वहाँ का वातावरण कुछ अजीब सा था — नीरव, लेकिन भीतर ही भीतर कुछ कहता हुआ। जैसे ही मैं थोड़ा आगे बढ़ा, मेरी नजर एक पेड़ पर पड़ी, जो बाकी पेड़ों से बिलकुल अलग था। वह पेड़ देखने में कुछ डरावना लग रहा था, मानो उसमें कोई रहस्य छिपा हो।

मैंने दो-तीन कदम ही आगे बढ़ाए थे कि अचानक कहीं से अजीब-अजीब आवाजें आने लगीं। मुझे डर लगने लगा — कहीं कोई जंगली जानवर तो नहीं? घबराकर मैं एक झाड़ी के पीछे छिप गया। तभी मेरी नजर एक चमकीली चीज़ पर पड़ी। डरते-डरते मैं उसके पास गया। वह एक चाबी थी।

जैसे ही मैंने चाबी उठाई, तभी अचानक एक गूंजती हुई आवाज आई — "डरो मत, मैं हूँ।" मैं चौंक गया और घबराते हुए पूछा, "तुम कौन हो? मेरे सामने आओ!" वह आवाज फिर आई, "मैं तुम्हारे सामने ही हूँ।" मैंने चारों ओर देखा, लेकिन वहां कोई नहीं था — बस पेड़ थे।

धीरे-धीरे मैं उस अजीब पेड़ के पास गया, जहाँ से आवाज आ रही थी। मैंने पूछा, "क्या कोई इस पेड़ के पीछे छिपा है?" लेकिन वहां कोई नहीं था। फिर मेरी नजर पेड़ के पास पड़े एक बक्से पर गई। तभी वही आवाज दोबारा सुनाई दी। इस बार वह और भी साफ़ थी — "मैं यह पेड़ ही बोल रहा हूँ।"

मैं घबरा गया — पेड़ कैसे बोल सकता है? तभी पेड़ ने कोमल स्वर में कहा, "डरो मत, मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।

बल्कि मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे आज़ाद कर दो।” मैं कुछ समझ नहीं पाया, लेकिन फिर भी हामी भर दी।

पेड़ ने कहा, “आज तक जो भी यहाँ आया, सबने मेरी मदद करने से मना कर दिया, सिवाय तुम्हारे। मेरे भीतर कई आत्माएं कैद हैं, जो मेरी आज़ादी के साथ मुक्त हो जाएँगी। लेकिन इसके लिए तुम्हें अपनी जान की आहुति देनी होगी।”

मैं थोड़ी देर चुप रहा, लेकिन फिर भी मैंने हाँ कह दिया। पेड़ ने कहा, “जिस चाबी को तुमने उठाया है, उससे इस बक्से को खोलो। फिर इसके सामने बैठकर तीन बार कहना – ऊँ, ऊँ, ऊँ।”

मैंने वैसा ही किया। जैसे ही तीसरी बार "ऊँ" कहा, चारों ओर तेज़ रौशनी फैल गई। पेड़ कांपने लगा, और बक्से से एक उजली किरण बाहर निकली – जैसे कोई आत्मा सदियों बाद मुक्त हुई हो। मेरे सामने खड़े पेड़ ने धीरे-धीरे अपनी शाखाएं फैलाईं और बोला, “अब मैं आज़ाद हूँ... और तुम्हारी आत्मा हमेशा मेरे साथ रहेगी। तुम्हारे इस बलिदान से सैंकड़ों आत्माएं मुक्त हो गईं।”

कहते हैं, "सच्ची बहादुरी सिर्फ खुद के लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए जीने और बलिदान देने में है।" वह पेड़ अब भी उस जंगल में है – शांत, लेकिन अब वह डरावना नहीं, बल्कि दिव्यता से भरा लगता है।

दूसरों के लिए निःस्वार्थ भाव से किया गया एक बलिदान, कई जिंदगियों को नई उड़ान दे सकता है।

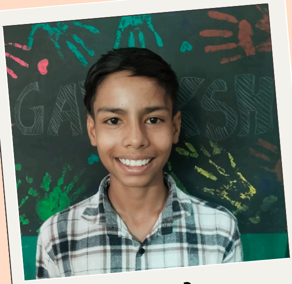

विकांत चौहान

कक्षा: 10वीं
गांव: लिखी
शौक: क्रिकेट
सपना: सेना में जाना

“गवाक्ष पाठशाला मुझे सेना में शामिल होने के अपने सपने के लिए मेहनत करने के लिए प्रेरित करती है। क्रिकेट खेलने से मुझे टीमवर्क और अनुशासन सीखने को मिलता है। मैं अपने देश की सेवा करने और अपने परिवार का सहयोग करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हूं।“

13

एक बहन की अद्भुत यात्रा

-तान्या राठौड़-

रुक्कू और जीना दो बहनें थीं। वे अक्सर छोटी-छोटी बातों पर झगड़ती रहती थीं। उनके माता-पिता उन्हें समझाते और डाँटते भी, लेकिन रुक्कू बहुत चतुर थी। जब भी दोनों मिलकर कोई शरारत करतीं, रुक्कू सारा दोष जीना पर डाल देती। जीना सच्ची थी, लेकिन फिर भी कोई उस पर विश्वास नहीं करता।

एक दिन दोनों घर में बॉल से खेल रही थीं, तभी रुक्कू की बॉल से टीवी टूट गया। आवाज सुनकर माता-पिता दौड़े आए। उन्होंने गुस्से से पूछा, "टीवी किसने तोड़ा?" रुक्कू ने रोते हुए कहा, "जीना ने।" जीना ने सच बताया कि टीवी रुक्कू ने तोड़ा है, लेकिन किसी ने उस पर विश्वास नहीं किया। पापा ने उसे डाँट दिया।

आहत होकर जीना घर से बाहर चली गई। वह पास के पार्क में एक बेंच पर बैठी रोने लगी। अचानक उसे झाड़ियों के पीछे से अजीब सी आवाजें सुनाई दीं। वह डर गई, पर फिर हिम्मत करके झाड़ियों की ओर बढ़ी। जैसे ही उसने कदम बढ़ाया, वह अचानक एक गड्ढे में गिर गई और फिसलती हुई एक अलग ही दुनिया में जा पहुँची। वहाँ पहुँचते ही वह बेहोश हो गई।

जब उसकी आँख खुली, वह एक पेड़ के नीचे थी। चारों ओर अजीब जीव-जंतु थे। तभी किसी ने उसके पैर पर अखरोट मारा। उसने ऊपर देखा – दो गिलहरियाँ पेड़ पर बैठी थीं और इंसानों की तरह बोल रही थीं।

"तुम यहाँ से आगे नहीं जा सकती," एक गिलहरी बोली।

जीना चौंकी, "तुम बोल कैसे रही हो?"

"हम तो हमेशा से ऐसे ही बोलते हैं," गिलहरी हँसी, "और तुम्हें राजा ने बुलाया है।"
कुछ देर में दो मगरमच्छ सैनिक आए, तलवारें थामे। उन्होंने कहा, "हमारे राजा ने तुम्हें बुलाया है। चलो हमारे साथ।"

जीना को एक महल में ले जाया गया, जहाँ का राजा एक विशालकाय डाइनासोर था।

राजा ने उससे स्नेहपूर्वक कहा, “डरो मत। हमारी दुनिया संकट में है। एक भयानक ड्रैगन हमें परेशान कर रहा है। वह सबकुछ जला रहा है, डर फैला रहा है। हमारी पुरानी किताबों में लिखा है कि एक इंसान, जो दिल से सच्चा हो, वही इस खतरे से हमें बचा सकता है और वह इंसान तुम हो।”

जीना पहले तो घबरा गई, पर फिर उसने हिम्मत दिखाई और मदद करने के लिए तैयार हो गई।

राजा ने उसे तलवार चलाना, घुड़सवारी करना और युद्ध की रणनीति सिखाई। जीना ने देखा कि यह दुनिया कार्टून जैसी थी — लोमड़ियाँ अपने बच्चों को स्कूल ले जा रही थीं, खरगोशों ने आइसक्रीम की दुकान खोली थी। यह एक जीवंत, मजेदार और रंगीन दुनिया थी — लेकिन संकट में थी।

कई दिनों की मेहनत के बाद युद्ध का दिन आ गया। ड्रैगन ने संदेश भेजा:
“अब तुम्हारा अंत नज़दीक है। तैयार रहो।”

राजा ने जीना को बुलाया और समझाया, “ड्रैगन के गले में एक जादुई लॉकेट है। जब तक वह रहेगा, ड्रैगन अमर है। तुम्हें वह लॉकेट निकालकर उसे नष्ट करना होगा।”

अगले दिन पूरी सेना युद्ध स्थल पर पहुँची। जैसे ही ड्रैगन आया, ज़मीन काँप उठी। वह आग उगल रहा था। जीना ने तलवार उठाई और डाइनासोर राजा के साथ उस पर हमला करने गई। पहले वार से कुछ असर नहीं हुआ। ड्रैगन ने पलटकर हमला किया। जीना नीचे गिर पड़ी। उसे चोटें आईं, लेकिन वह हार नहीं मानी।

उसने अपने दोस्तों को इशारा किया, “ड्रैगन का ध्यान भटकाओ।” जब सबने ड्रैगन को उलझाया, जीना उसकी गर्दन के पास पहुँची और जल्दी से उसका जादुई लॉकेट निकाल लिया। फिर पूर्वजों की तलवार से उसने ड्रैगन की गर्दन पर वार किया। ड्रैगन ज़ोर से चिल्लाया और अंततः मर गया। उसके साथ उसकी सारी सेना भी नष्ट हो गई।

पूरा टुनटुन नगर खुशी से झूम उठा। राजा ने कहा, “हमें पता था, तुम ही हमारी रक्षक बनोगी।” अगली सुबह टुनटुन नगर में उत्सव रखा गया। जीना सबके साथ नाची-गाई, आइसक्रीम खाई और सभी दोस्तों के साथ मस्ती की।

लेकिन फिर उसे अपने घर की याद आने लगी।
राजा ने उसकी भावनाओं को समझा और कहा, “अब तुम्हें घर लौटना चाहिए।”

उन्होंने एक गुप्त द्वार खोला और मंत्र बोला, “खुल जा सिम-सिम!”

दरवाज़ा खुलते ही जीना उसमें दाखिल हुई और सीधे अपने घर पहुँच गई। माँ-पापा और रुक्कू उसे देखकर दौड़े आए। उन्होंने गले लगाकर माफी माँगी। जीना ने अपनी पूरी कहानी उन्हें सुनाई। रुक्कू ने भी अपनी गलती मानी और जीना से कहा, “तुम्हारी कहानी तो एक सपने जैसी लगती है!”

जीना मुस्कराई और बोली,
“नहीं, ये सपना नहीं था। ये मेरी अपनी जादुई दुनिया थी — जहाँ मैंने खुद पर विश्वास करना सीखा।”

तान्या राठौड़

कक्षा: 8वीं
गांव: लिखी
शौक: नृत्य
सपना: शिक्षिका बनना

“गवाक्ष पाठशाला का सहयोग मेरे लिए आशा की किरण है। मैं शिक्षिका बनकर बदलाव लाना चाहती हूं। नृत्य मुझे कठिनाइयों के बावजूद मेहनत करने और अपने परिवार का साथ देने की प्रेरणा देता है।”

14

चित्रों वाली तक़दीर

-मनीष कुमार-

एक गाँव में भीम नाम का एक गरीब व्यक्ति रहता था, जो रोज़ काम की तलाश में घर से निकलता था। एक दिन सुबह से दोपहर हो गई, लेकिन उसे कहीं काम नहीं मिला। वह थक-हार कर परेशान हो गया। मन ही मन सोचने लगा, "अगर आज भी काम नहीं मिला तो घर जाकर पत्नी को क्या जवाब दूँगा? घर में राशन भी नहीं है... क्या पता बच्चे भूखे हों!" पसीने से तर-बतर भीम जब वापस लौटने को हुआ, तभी उसे किसी की आवाज सुनाई दी—"हार मत मानो, तुम्हें काम जरूर मिलेगा।"

वह आवाज उसके भीतर एक नई ऊर्जा भर गई। भीम ने फिर से काम की तलाश शुरू की। थककर वह एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठ गया। तभी उसका फोन बजा। पत्नी का कॉल था, "अरे, आज खाना खाने घर क्यों नहीं आए?" भीम ने झूठ बोलते हुए कहा, "मालिक ने काम ज्यादा करवाया, इसलिए रोक लिया और उन्होंने मेरे लिए कचौड़ी मंगवाई थी।" जबकि सच्चाई ये थी कि भीम ने सुबह से कुछ भी नहीं खाया था। पत्नी ने कहा, "मैंने और चिंटू ने चावल खा लिए हैं। तुम लौटते हुए किताबें और पेंसिल लेते आना।"

भीम दुखी मन से सोच ही रहा था कि अब क्या करे, तभी एक आदमी उसके पास आया और पूछा, "क्या तुम्हें काम चाहिए?" भीम ने तुरंत कहा, "हां, ज़रूर!" उस आदमी ने बताया कि उसे घर के पीछे 10 फुट गहरा गड्ढा खुदवाना है। भीम ने बिना सोचे कुदाल उठाई और खुदाई शुरू कर दी। जब वह तीन फुट खोद चुका था, तो उसे एक मटकी मिली। मटकी खोलते ही उसकी आँखें चौंधिया गईं—वो सोने से भरी थी!

कुछ पल को भीम के मन में लालच आया, लेकिन फिर उसने ईमानदारी दिखाई और मटकी मालिक को सौंप दी। मालिक ने खुश होकर उसे 10,000 रुपये इनाम में दिए। भीम वो पैसे लेकर राशन और चिंटू के लिए किताबें खरीदकर घर लौट आया। चिंटू अपनी नई कॉपी में एक सुंदर घर बनाता है और मम्मी-पापा को दिखाता है।

पाँच साल बाद...

अब चिंटू 15 साल का हो चुका था। एक दिन जब उसके पापा काम पर गए थे, उसकी मम्मी ने लकड़ी लाने की ज़िम्मेदारी चिंटू को दी। चिंटू कुल्हाड़ी और रस्सी लेकर जंगल की ओर निकल पड़ा। जंगल में हवा की सरसराहट और पक्षियों की आवाज़ों ने उसे थोड़ा डरा दिया। तभी पीछे से एक गूंजती हुई आवाज आई—"तुम कौन हो?" चिंटू घबरा गया, "कहीं कोई भूत तो नहीं?" पीछे मुड़कर देखा तो वहाँ एक बूढ़े साधु खड़े थे, जिनकी उम्र सौ साल से भी अधिक लग रही थी।

साधु ने मुस्कुराकर कहा, "बेटा, तुम अच्छे दिल के हो। इसलिए मैं तुम्हें एक जादुई पेंसिल देता हूँ। इससे जो भी चित्र बनाओगे, वह असली बन जाएगा। लेकिन ध्यान रखना—अगर तुम हार मानोगे, तो यह पेंसिल काम नहीं करेगी।"

चिंटू ने प्रयोग के लिए एक लोटे का चित्र बनाया और देखते ही देखते, असली लोटा उसके सामने आ गया। वह बहुत खुश हुआ। उसने सोचा, "अब लकड़ी का चित्र बनाकर काम आसान हो जाएगा।" लेकिन तभी उसे साधु की बात याद आई—"यदि तुम मेहनत छोड़ दोगे, तो पेंसिल काम नहीं करेगी।" यह याद आते ही उसने खुद पेड़ काटकर लकड़ी इकट्ठा की और घर ले आया।

घर पहुंचकर उसने जादुई पेंसिल के बारे में मम्मी-पापा को बताया। फिर वह एक चित्रों की किताब लेकर पेंसिल से ज़रूरत की चीजें बनाने लगा—कपड़े, किताबें, बर्तन, सबकुछ। जादुई पेंसिल ने परिवार की ज़िंदगी बदल दी। चिंटू न सिर्फ अपने घर की ज़रूरतें पूरी करता, बल्कि गाँव के गरीब लोगों की भी मदद करने लगा।

लेकिन एक दिन...

चिंटू अपनी पेंसिल लेकर दोस्त के घर जा रहा था, तभी रास्ते में कुछ डाकूओं ने उसे घेर लिया। एक डाकू बोला, "जादुई पेंसिल हमें दे दो, वरना जान से मार देंगे!" चिंटू डर गया, लेकिन हिम्मत से बोला, "यह पेंसिल सिर्फ मेरी बात मानती है। आप इससे जो बनवाना चाहेंगे, वह प्रकट नहीं होगा।" डाकू ज़िद करने लगे, "सोने की ईंट बनाकर दो!" चिंटू मुस्कराया और पेंसिल से सैनिकों का चित्र बना दिया। कुछ ही पलों में सैनिक प्रकट हो गए और डाकुओं को पकड़कर जेल भिजवा दिया।

चिंटू सही-सलामत घर लौट आया और सारी बात अपने मम्मी-पापा को बताई। उसके मम्मी-पापा ने उसे शाबाशी दी और गले से लगा लिया।

मनीष कुमार

कक्षा: 10वीं
गांव: सहनौली
शौक: पढ़ना
सपना: नेवी ऑफिसर बनना

“गवाक्ष पाठशाला के माध्यम से अपनी कहानी साझा करना मेरे लिए गर्व की बात है। मुझे पढ़ना बहुत पसंद है और मैं नेवी ऑफिसर बनने का सपना देखता हूं। गवाक्ष में जो अनुशासन और प्रोत्साहन मिलता है, वह मेरे आत्मविश्वास को हर दिन मज़बूत करता है। यहां सीखने का हर अवसर मुझे मेरे लक्ष्य के एक कदम और करीब ले जाता है।”

15

अनोखी दोस्ती

-मानसी तेवतिया-

एक बार की बात है, एक लड़का था जिसका नाम रोहन था। वह अकेले जंगल की सैर पर निकला था। वह जंगल बहुत सुंदर और शांत था। पेड़ों से होकर ठंडी हवा बह रही थी, जिससे “सर-सर” की मधुर आवाज आ रही थी। रोहन चारों तरफ़ के नज़ारों में खोया हुआ था।

तभी अचानक, एक बिल्ली उसके सामने कूदकर आ गई। वह बिल्ली कुछ अलग ही थी – उसकी आंखें लाल थीं और नाखून बहुत बड़े और तेज़ थे। रोहन डर गया। उसके हाथ-पैर कांपने लगे। उसने ऐसा कभी नहीं देखा था।

लेकिन तभी, उस बिल्ली ने बातें करनी शुरू कर दीं।

“डरो मत! मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाऊंगी,” उसने कहा।

रोहन हैरान रह गया। “त...तुम... बोल रही हो?” वह कांपते हुए बोला।

बिल्ली मुस्कराई और लेकिन तभी, उस बिल्ली ने बातें करनी शुरू कर दीं।

“डरो मत! मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाऊंगी,” उसने कहा।

रोहन हैरान रह गया। “त...तुम... बोल रही हो?” वह कांपते हुए बोला।

बिल्ली मुस्कराई और बोली, “हाँ! इस जंगल के जानवर इंसानों से बात कर सकते हैं। मेरा नाम टेशा है। क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे?”

धीरे-धीरे रोहन का डर खत्म हो गया। अब वह और टेशा बहुत अच्छे दोस्त बन चुके थे। टेशा ने उसे जंगल की और भी चीज़ें दिखाईं – बोलने वाले खरगोश, गाने गाने वाले तोते और चॉकलेट के पेड़!

शाम होते ही रोहन घर लौटने लगा। टेशा भी उसके साथ गई। जब वे दोनों रोहन के घर पहुँचे, तो उसके माता-पिता और पड़ोसी बहुत डर गए। सभी ने टेशा की लाल आंखें और नुकीले नाखून देखकर चिल्लाना शुरू कर दिया।

रोहन ने सबको समझाया, “डरिए मत! टेशा बहुत अच्छी है। यह बात भी कर सकती है।”

और फिर टेशा ने खुद बोलकर सबको चौंका दिया, “नमस्ते! मेरा नाम टेशा है।”

सब लोग धीरे-धीरे शांत हो गए और फिर टेशा को पसंद करने लगे।

दिन बीतते गए। रोहन और टेशा की दोस्ती और गहरी होती गई। वे साथ में खेलते, कहानियाँ सुनते और जंगल की सैर करते।

एक दिन वे फिर से जंगल में गए। वहां उन्हें एक रहस्यमयी गुफा दिखाई दी। लेकिन उस पर एक चेतावनी लिखी थी: "मनुष्यों का प्रवेश वर्जित है!"

रोहन बोला, “टेशा, क्या तुम अंदर जाकर देख सकती हो?”

टेशा ने सिर हिलाया और गुफा में घुस गई। थोड़ी देर बाद वह बाहर आई और चौंककर बोली, “अंदर खजाना है! सोने-चांदी के सिक्के और कीमती चीज़ें!”

फिर उन्होंने धीरे-धीरे खजाना बाहर निकाला। उन्होंने उसे बेचा और उसका सारा पैसा ज़रूरतमंदों में बाँट दिया। वे गरीबों के लिए भोजन लेकर गए, कुछ गायों और कुत्तों के लिए भी खाना और दवा भेजी।

लोगों ने रोहन और टेशा को दुआएँ दीं। अब सब उन्हें जानते थे — "दो दोस्त जो इंसान और जानवर की दोस्ती की मिसाल बन गए थे।"

लेकिन एक दिन अचानक टेशा की तबीयत बहुत खराब हो गई। वह बोल नहीं पा रही थी। उसकी सांसें धीमी हो रही थीं।

रोहन बहुत दुखी हो गया। वह भागकर उसे अस्पताल ले गया।

“अगर टेशा को कुछ हो गया, तो मैं क्या करूँगा?” वह रोते हुए बोला।

वह अस्पताल के बाहर बैठा आँसू बहा रहा था।
कुछ घंटे बाद डॉक्टर बाहर आए। “अब वह ठीक है,” उन्होंने कहा।

टेशा बाहर आई और सबसे पहले रोहन को गले लगा लिया।

कुछ ही दिनों में वह पूरी तरह ठीक हो गई और दोनों फिर से घर लौट आए।

अब रोहन और टेशा और भी अच्छे दोस्त बन गए थे। वे मिलकर हर महीने गरीबों के लिए कुछ करते, जंगल के जानवरों की मदद करते और सबके चेहरों पर मुस्कान लाते।

अब टेशा का नाम सब जानते थे। वह सिर्फ एक बोलने वाली बिल्ली नहीं, बल्कि सबकी दोस्त बन चुकी थी।

और रोहन? वह अब जंगल का सबसे खास दोस्त था, जिसे जानवरों की भाषा समझ में आती थी।

मानसी तेवतिया

कक्षा: 6ठी
गांव: सहनौली
शौक: नृत्य और किताबें पढ़ना
सपना: शिक्षिका बनना

गवाक्ष पाठशाला का हिस्सा बनकर मैं बहुत खुश हूं। मैं शिक्षिका बनना चाहती हूं और किताबें पढ़ना मुझे बहुत पसंद है। नृत्य भी मुझे खुशी देता है। यहां की कहानियां, गतिविधियां और सदा कुछ सीखना मुझे हर दिन कल्पना करने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

आभार

प्रयासों की सीढ़ी चढ़ते हुए 'गवाक्ष' आज जिस मुकाम पर पहुंचा है, वह इसके साथ जुड़े लोगों के बिना संभव नहीं था। एक दशक की यात्रा पूरी करने के दौरान 'गवाक्ष' का परिवार बड़ा होता गया और इससे जुड़ने वाला हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनता गया। दस वर्षों का ये ख़ूबसूरत सफ़र, इसके स्मरणीय पल और उपलब्धियां इसके संरक्षक, शिक्षक, वॉलंटियर्स, बच्चों और समय-समय पर 'गवाक्ष' का सहयोग करने वाले दोस्तों के बिना संभव नहीं थीं।

जिनके होने से 'गवाक्ष' सपने देखने की हिम्मत कर सका... हर चुनौती में हमारा साथ देने वाले, हर सपने को पूरा करने में कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सक्रिय सहभागिता करने वाले हर व्यक्ति के प्रति 'गवाक्ष' आभार व्यक्त करता है, जिनके प्रोत्साहन के अभाव में ये पड़ाव हासिल करना मुमकिन नहीं था।

विशेष आभार

JANAK MOHINI KAPUR MEMORIAL TRUST

KEGGFARMS
Pioneering - A Way of Life

Avitech
Knowledge | Nutrition | Innovation

INDOVAX

OST

NEW EDGE COMMUNICATIONS PVT. LTD

गवाक्ष : एक परिचय

समाज के वंचित वर्ग के बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग प्रदान करके सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से 'गवाक्ष' की शुरुआत जून 2015 में हुई। सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1860 के अंतर्गत पंजीकृत 'गवाक्ष' एक स्वतंत्र समाज कल्याण संगठन के रूप में काम करता है। हमारा प्रमुख उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में असमानता को दूर करना और कमज़ोर वर्ग को सशक्त बनाना है।

हरियाणा के लिखी और सहनौली में मौजूद गवाक्ष के केंद्र बच्चों को न सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग करते हैं बल्कि उनकी रचनात्मक क्षमता और कौशल विकास के लिए भी नवोन्मेषी कार्य कर रहे हैं। इनमें डिजिटल पाठशाला, गवाक्ष बुकशाला और बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए अन्नपूर्णा अभियान विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

ख़्वाबों की खिड़की

एक दशक की यात्रा पूरी करते हुए गवाक्ष ने कहानी संग्रह के प्रकाशन के साथ एक नई शुरुआत की है। जिन बच्चों के भविष्य को संवारने का सपना गवाक्ष ने देखा है, उन बच्चों के ख़्वाबोंको आवाज़ देने की एक कोशिश है - 'ख़्वाबोंकी खिड़की'। हाशिये पर जी रहे समाज के इन बच्चों को मुख्य धारा से जोड़ने के प्रयास में हमने जाना कि इनकी आकांक्षाओं की उड़ान बहुत ऊंची है। इनकी अपनी सोच है, इनके पास सिर्फ कल्पनाएं नहीं बल्कि अपने विचार हैं और ये कहानियां इन विचारों को शब्दों के रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास मात्र है।

gavaKsh
Window to Happiness